SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:54, Issue: 01
June-2024, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

जून-2024
रु.20/-

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का ज्येष्ठाभिषेक

दि.19-06-2024 से दि.21-06-2024 तक

अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

दिनांक	वार	दिन	रात
16-06-2024	रविवार	- - -	सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण
17-06-2024	सोमवार	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण	महाशेषवाहन
18-06-2024	मंगलवार	लघुशेषवाहन	हंसवाहन
19-06-2024	बुधवार	सिंहवाहन	मोतीवितानवाहन
20-06-2024	गुरुवार	कल्पवृक्षवाहन	सर्वभूपालवाहन
21-06-2024	शुक्रवार	पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव	गरुडवाहन
22-06-2024	शनिवार	हनुमद्वाहन	गजवाहन
23-06-2024	रविवार	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
24-06-2024	सोमवार	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
25-06-2024	मंगलवार	चक्रस्नान	ध्वजावरोहण

तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का प्लवोत्सव

दिनांक	वार	उत्सव
17-06-2024	सोमवार	श्रीकृष्णस्वामी जी को
18-06-2024	मंगलवार	श्री सुंदरराजस्वामी जी को
19-06-2024	बुधवार	श्री पद्मावती देवी जी को
20-06-2024	गुरुवार	श्री पद्मावती देवी जी को
21-06-2024	शुक्रवार	श्री पद्मावती देवी जी को

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-१५)

हे पुरुष श्रेष्ठ! दुःख-सुख को समान समझनेवाले जिस धीर पुरुष को ये इन्द्रिय और विषयों के संयोग व्याकुल नहीं करते, वे मोक्ष के योग्य होता है।

तंदनाना आहि तंदनानापुरे
तंदनाना भला तंदनाना ॥तंदनाना॥

ब्रह्ममोक्कटे परब्रह्ममोक्कटे पर
ब्रह्म मोक्कटे परब्रह्ममोक्कटे ॥तंदनाना॥

कंदुवगु हीनाधिकमुलिंदु लेवु
अंदरिकि श्रीहरे अंतरात्मा
इंदुलो जंतुकुल मंतानोकटे
अंदरिकि श्रीहरे अंतरात्मा ॥तंदनाना॥

निंडार राजु निद्रिंचु निद्रयु नोकटे
अंडने बंटु निद्र अदियू नोकटे
मेंडैन ब्राह्मणुडु मेट्टुभूमि योकटे
चंडालुडुंडेटि सरिभूमि योकटे ॥तंदनाना॥

कडगि एनुगु मीदा गायु येंडोकटे
पुडमि शुनकमु मीद बोलयु नेंडोकटे
कडु पुण्युलनु पाप कर्मुलनु सरिगाव
बडयु श्रीवेंकटेश्वरु नाममोकटे ॥तंदनाना॥

परब्रह्म की सर्वाधिकता का कीर्तिगान किया गया है। इस धरती पर स्थित जीवराशि में उन्हें कोई अंतर दिखायी नहीं देता है। इनमें हीन तथा अधिक कोई नहीं है। सबों की अंतरात्मा, श्रीहरि ही हैं। महाराजा और गरीब दोनों की नींदों में असमानता नहीं होती है। (उनकी दीर्घ निद्रा में भी कुछ भिन्नता नहीं होती है।) ब्राह्मण जिस धरती पर जीवन- यापन करता है, उसी धरती पर चंडाल भी जीवन बिताता है। गजराज पर पडनेवाली सूर्यकांति तथा शुनक पर पडनेवाली सूर्यकांति एक समान है। इसी तरह पुण्यात्माओं तथा पापात्माओं की भी रक्षा करनेवाला मात्र श्री वेंकटेश ही हैं।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान
श्री वेंकटेश्वर अन्नप्रसाद ट्रस्ट

तिरुमल, तिरुचानूर में हजारों की संख्या में भक्तों को प्रतिदिन अन्नप्रसाद वितरण की बात भक्तों को विदित ही है। अब ति.ति.दे अन्नप्रसाद ट्रस्ट भक्तों, दाताओं को दान देने का अवसर देना चाहता है। इसलिए एक दिन दान की योजना प्रवेश कर रहा है।

एक रोजाना खर्च -

1. एक दिन - 38 लाख (सितंबर, 2024 तक मात्र ही यह सुविधा है)
2. अल्पाहार - 8 लाख
3. मध्याह्न भोजन - 15 लाख
4. रात्रि भोजन - 15 लाख

तिरुमल तिरुपति देवस्थानों का अन्नदान ट्रस्ट इस नकद को दाताओं से स्वीकार करने के लिए सिद्ध हो रहा है। दाताओं - व्यक्तियों/कंपनियों/संस्थाओं/ट्रस्टों/संयुक्त ढंग से भी इस ट्रस्ट को दान दे सकते है। अपने मर्जी के अनुसार सूचित एक दिन पर अन्नदान कर सकती है। और दाता का नाम भी अन्नदान केंद्र में डिसूप्ले होता है। दाताओं को ति.ति.दे. के द्वारा आयोजित सुविधाएँ दी जायेगी।

अन्य विवरण के लिए संपर्क करें -
उप कार्यकारी अधिकारी (डोनार सेल), आदिशेषु विश्रांति भवन,
ति.ति.दे., तिरुमल।
वेबसाइट - cdmc.ttd@tirumala.org / dyeodonorcell.ttd@tirumala.org
दूरभाषा - 0877-2263001 (24/7)
0877-2263472 (कार्यालय समय में)

(सूचना - उपर्युक्त विषयों पर परिवर्तन होनी की संभावना है।)

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-55 जून-2024 अंक-01

विषयसूची

कल्पवृक्षसमान मोतंपल्लि बलभीमराय मंदिर	डॉ.के.सुधाकर राव	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	10
अक्षर यज्ञ	श्री वेमुनूरि राजमौलि	13
ऋषि पराशर	डॉ.जी.सुजाता	15
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	18
'गीता' ज्ञान-भंडार	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	20
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव, प्रो.गोपाल शर्मा	23
सीता-एक आदर्श व्यक्तित्व	डॉ.के.एम.भवानी	31
विभाजन (वेद गणित में)	डॉ.वड्डी जगदीश	34
अन्तरंग में षड्रिपु	श्रीमती वी.केदारम्मा	36
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	37
नरसिंहावतार और नव नरसिंह क्षेत्र अहोबिल	प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	38
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	41
केसर	डॉ.सुमा जोषि	45
जून महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - सुखमय जीवन का रहस्य	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - हरि नाम का महत्व	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 23		52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - वज्र, मोती, स्वर्ण कवच में श्री मलयप्पस्वामीजी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी का प्लवोत्सव।

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

संपादकीय

मानव सेवा ही माधव सेवा!!

'योगो योग विदां वरः'। यह श्लोक विष्णु सहस्रनाम का एक प्रसिद्ध श्लोक है। यह श्लोक भगवान विष्णु के विशेष गुणों को बताने वाला श्लोक है। 'योगो' माने चित्त स्थैर्य को प्रदान करने वाले, 'योग' माने ध्यान, 'विदां वरः' माने योग करने के लिए उत्तम कारक। ये सब शब्द विष्णु भगवान ने अपने भक्त को ध्यान में स्थिरत्व को प्रधान करते है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन को उपदेश दिया है की - 'योग क्षेमं वहाम्यहम्'। भगवद्गीता में भगवान कृष्ण द्वारा युद्ध के बाद योग और आत्म-समर्पण की अवधारण पर अर्जुन के मन को स्थिर करने के लिए उपयोग किया गए उपदेश के रूप में प्रसिद्ध वाक्य है।

'योग' एक प्राचीन भारतीय मानसिक विकास के लिए कारक बने हुए तांत्रात्मक विद्या है। शारीरिक व मानसिक विकास के लिए एक प्राकृतिक उपकरण के रूप में उपयोग किया जाता है। योग में - व्यायाम, प्राणायाम, ध्यान और आध्यात्मिक अभ्यास भी हैं। योग के माध्यम से मन शांत चित्त रूप में रह सकते हैं। योग जैसा विधान से स्वास्थ्य वर्धक हृदय, तंदुरुस्ति और आध्यात्मिक स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

'योगः कर्मसु कौसलम्' कर्मसु कौसलम् माने कर्मानुष्ठान विधि-विदान के अनुसार क्षमता पूर्वक निर्वहण करना है। व्यक्ति अपना कर्त्तव्यों पर रुचि नहीं रहती है तो स्वतंत्र रूप से करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। लेकिन यह योगानुष्ठान योग की एक विधि है और इसका उपयोग अन्य योग मार्गों के विभिन्न आश्रमों में विभिन्न प्रथाओं में किया जा सकता है। यही कारण है कि भारत दुनिया के सभी देशों में अग्रणी है और यही कारण है कि हर साल २१ जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान न केवल भक्तों को भगवान के दर्शन कराता है बल्कि सामाजिक सेवाओं पर भी भागीदार होता है। योग आयुर्वेद रोग की रोकथाम, निवारक उपचार और समग्र चिकित्सा के साथ छोटे बच्चों पर अपना ध्यान केंद्रित करता हैं।

किसी भी प्रकार से तिरुपति में योग अध्ययन केंद्र द्वारा शारीरिक एवं मानसिक विकासों को दूर करना, आयुर्वेद चिकित्सालय द्वारा आयुर्वेद से रोगों का उपचार, श्री वेंकटेश्वर वैद्य विज्ञान संस्थान द्वारा अलोपति चिकित्सा, बर्ड(BIRRD) आस्पताल द्वारा अस्थि विकृति का सुधार, छोटे बच्चों में हृदय संबंधी रोगों का उपचार श्री पद्मावती हृदयालय आदियों के साथ-साथ तिरुमल में अश्विनी वैद्यालय की स्थापना की गई है और तिरुमल तिरुपति देवस्थान नामक एक महान धर्मार्थ, धार्मिक सेवाओं के साथ स्वास्थ्य कार्यक्रमों में अग्रणी भूमिका निभाता है।

इसीलिए तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने 'मानव सेवा ही माधव सेवा' मानकर इस दिशा में एक कदम आगे बढ़या है।

मोतंपल्लि दिव्यक्षेत्र कर्नाटक राज्य के गुल्बर्गा जिला, सेडं तालूक में विद्यमान है। यहाँ पर बलभीमराय के नाम से हनुमान विराज मान है। यह क्षेत्र यानागुन्दी-गुर्मिट्कल से 7 कि.मी. दूरी पर है। हैदरबाद से 151 कि.मी. दूरी पर यह क्षेत्र विद्यमान है। इस क्षेत्र में 'मोदग' (पलाश) वृक्ष अत्यधिकमात्रा में उपलब्ध है। इसलिए इस क्षेत्र का नाम 'मोदुगपल्लि' बन गया। कालक्रम में 'मोदुगपल्लि' 'मोतंपल्लि' के नाम से विख्यात हो गया। इस क्षेत्र में नारद ने शूद्रबालक के रूप में जन्म लिया।

नारद वृत्तांत -

प्राचीन काल में कुछ यति गण तीर्थयात्रा पर निकले थे। अन्य तीर्थों के दर्शन के बाद वे सभी तिरुपति जाना चाहते थे। उस समय चातुर्मास्य का संकल्प लेना था। वे सभी परिव्राजक मोतंपल्लि गाँव में आकर, भगवान् की स्तुति करने लगे। शास्त्रों की चर्चा करते हुए तत्वचिन्तन में डूबे हुए थे। उस समय एक शूद्र बालक उनकी सेवा करने लगा।

कल्पवृक्षसमान मोतंपल्लि बलभीमराय मंदिर

-डॉ.के.सुधाकर राव

उसकी सेवा से अत्यन्त सन्तुष्ट परिव्राजकों ने उसको मंत्रोपदेश दिया। उस बालक की माँ सर्पदष्ट होकर मर चुकी थी। वह बालक एक अरण्य में प्रविष्ट होकर एक अश्वत्थ वृक्ष के नीचे गुरुपदिष्ट मंत्र का जप करने लगा। कुछ समय बाद उसको भगवान वासुदेव (विष्णु) का दर्शन हुआ। थोडी देर के बाद भगवान् अदृश्य हो गये। परन्तु बालक बार-बार भगवान् का दिव्यरूप का दर्शन करना चाहता था। इतने में आकाश से वाणी सुनाई दे रही थी।

''हे बालक! इस जन्म के लिए इतना ही पर्याप्त है। तुम मंत्रसाधना को जारी रखो। किसी जन्म में तुझे मेरा सायुज्य प्राप्त होगा''। उस वाणी के मुताबिक दूसरे जन्म में बालक ने ब्रह्ममानसपुत्र के रूप में जन्म लिया। वह महर्षि नारद थे। नारद को शूद्रजन्म की प्राप्ति का कारण क्या है?

उपबर्हण का वृत्तांत -

प्राचीन काल में उपबर्हण नामक एक गन्धर्व अपनी धर्मपत्नी के साथ ब्रह्म की सभा में प्रविष्ट हुआ। वहाँ पर पार्वती के अत्यंत निकट आलिंगन कर बैठे हुए परमेश्वर को देख गन्धर्व ने कहा- ''भरी सभा में आप का इस प्रकार बैठना लज्जा का विषय हैं। इतना कह पर उपबर्हण दोनों का उपहास करने लगा। उसकी इस हरकत से क्रोधित पार्वती ने- ''तुम शूद्र बन जाओ'' इस प्रकार श्राप दिया।

पश्चात्ताप से तप्त उपबर्हण ने क्षमा माँगी। पुनः प्रसन्न होकर देवी ने कहा-

''तुम यद्यपि शूद्र हो तथापि भगवान् के भक्त बन जाओंगे। कुछ समय बाद परिव्राजकों की सेवा के माध्यम से, ज्ञान प्राप्त कर, धन्य बन जाओगे, तुम्हे मोतंपल्लि गाँव में जन्म लेकर वहाँ के बलभीमराय (हनुमानजी) की सेवा में निमग्न होना पड़ेगा।'' पार्वती के श्राप की वजह से उपबर्हण को शूद्रजन्म की प्राप्ति हुई।

प्राचीन काल में कृष्णावीरवासी एक योगी ने तीर्थयात्रा के बहाने पूरा भारत घूमना प्रारंभ किया। बदरी क्षेत्र में कुछ समय तक रहने के बाद अपने योगबल से वह योगी किंपुरुषखंड पहुँच गया। हिमालय के समीप किंपुरुषखंड विद्यमान है। वहाँ पर हनुमानजी रहते हैं। साधारण व्यक्ति यहाँ पर जा नहीं सकते। वहाँ पर उस योगी ने घोर तपस्या की। उस तपस्या से प्रसन्न होकर हनुमान प्रकट हुए। हनुमान ने कहा-

''हे तपस्वी! आप की अभिलाषा क्या है?'' योगी ने नतमस्तक होकर कहा- ''प्रभु! आज कल कलियुग आप के प्रति लोगों में भक्ति भाव का ह्रास हो चुका है। मोतंपल्लि क्षेत्र तिरुपति का पूर्वद्वार कह

लाता है। आप इस गाँव में पधारकर भक्तों की कांक्षाओं को पूर्ण करें''।

हनुमान ने कहा - ''तथास्तु''।

उस योगी की तपस्या के परिणाम स्वरूप हनुमान जी 'बलभीमराय' के नाम से उस गाँव में प्रकट हुए। किसी भक्त को स्वप्न में आंजनेय (हनुमान) ने सूचना दी। वहाँ पर खोदने के बाद हनुमान की मूर्ति मिली। उसी मूर्ति को भक्तों ने मोतंपल्लि में स्थापित किया। सुंदर मंदिर का निर्माण भी संपन्न हुआ। हनुमान का मंदिर, गर्भगृह अत्यन्त सुंदर है। रंगमंटप, गर्भगृह छह फुट की ऊँचाई पर स्थित है। जब भी यहाँ पधारते हैं, श्री मध्वाचार्य मूलसंस्थान के उत्तरादिमठाधीश नवरत्नमण्टप में श्रीमूलराम की अर्चना करते हैं। गर्भगृह एवं रंगमण्टप के इर्द गिर्द परिक्रमा करने के लिए पर्याप्त स्थल है।

गोपुर एवं मुखमंटप का निर्माण 'अमरशिल्पि जक्कणाचारि' ने किया है।

मंदिर के ऊपर जो छत है, वह मंदिर से संबंधित नहीं है। मुखमंडप के बाहर विद्यमान स्तंभ पर एक शिलालेख है। यह चालुक्य विक्रम के समय का शिलालेख है।

यहाँ पर चतुरस्राकार में एक पुष्करिणी है। इस पुष्करिणी में भ्रमरों का झंकार निरंतर सुनाई देता है। इस पुष्करिणी का जल अत्यंत पवित्र माना जाता है। बलभीमराय (हनुमान) की पूजा, अभिषेक इत्यादि के लिए इसी जल का उपयोग किया जाता है।

हनुमत् जयंती, रथसप्तमी जैसे पर्वों पर यहाँ पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन होता है। कई भक्तों का अनुभव यही है कि मोतंपल्लि क्षेत्र के हनुमान बलभीमराय के दर्शन मात्र से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। सभी मनोरथ सफल होते ही हैं। भगवान् श्रीराम का भक्त हनुमान शीघ्र प्रसन्न होने वाले देव है। मोतंपल्लि बलभीमराय का दर्शन करना प्रत्येक भक्त का आद्य कर्तव्य है।

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में १०८ बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

(गतांक से)

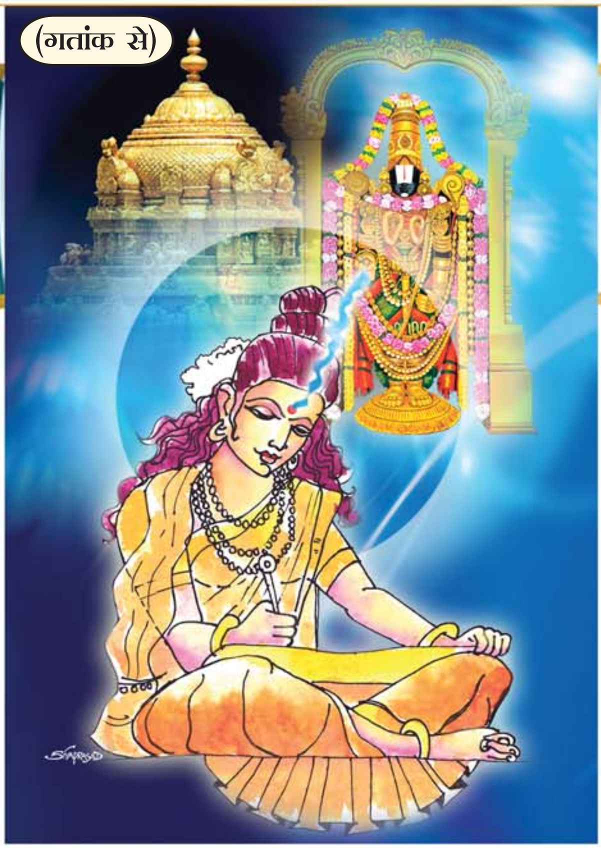

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तृतीय आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

अष्ट विध कुंभक :

1. सूर्यभेदन कुंभक :

वर योगी वज्रासन पर बैठ कर वाम नाडि से अंदर कुंभक करने की तरह वायु को धीरे-धीरे छोडकर, बाद में फिर दक्षिण नाडि से बाहर की वायु को धीरे-धीरे अंदर की तरफ खींचते, तब केश से लेकर नख तक रोक कर कुंभक करना चाहिए। वाम नाडि के द्वारा कपाल शोधन करना चाहिए। इससे क्रिमी, वात बाधाएँ दूर होती हैं। हे देवी! यह सूर्य भेदन कुंभक है। फिर उंझाइ कुंभक के बारे सुनो।

2. उंझाइ कुंभक :

अपने मुँह को बांध कर अपनी नासिका रंध्रों से वायु को खींचकर, कंठ में घोष करते हुए अंदर हृदय को स्पर्श करते हुए अंदर ही प्राण को रोक कर फिर अंदर से वायु को छोडना उंझाइ कुंभक है। इससे श्लेष्म का हरन होता है। जठराग्नि की वृद्धि होती है। धातुगत दोष धीरे-धीरे ठीक हो जाते हैं। चलते और बैठते इस उंझाइ कुंभक को दिन में गुप्त रूप में क्रम से किया जाता है। हे देवी! अब मैं सीत्कार कुंभक के बारे में बताऊंगा।

3. सीत्कार कुंभक :

हे देवी! नासिका रंध्रों से करनेवाले सीत्कार कुंभक मुँह से करने से नींद, भूख आदि का पता नहीं चलता है। मनुष्य स्वच्छंद शरीरवाला बनेगा। वह ऐसा है कि जीभ से, गालों से वायु को सदा खींचते रहने से, छे महीनों में सकल रोगों से मुक्त होकर, योगिनी चक्र समान शक्तिमान बनता है। दूसरा वासुदेव बनता है। यह सीत्कार कुंभक है। और सीतली नामक कुंभक के बारे में बताऊंगा। सुनो।

4. सीतली कुंभक :

योगी नासिका से धीरे-धीरे वायु को खींच कर, पूर्व प्रकार से कुंभक करके नासिका रंध्रों से वायु को निकालना सीतली कुंभक है। इससे बहुरोग बाधाएँ दूर होती हैं।

5. भस्त्रिका कुंभक :

अब भस्त्रिका कुंभक के बारे में बताऊंगा। सुनो। पद्मासन पर बैठ कर उदर और ग्रीव को सीधा करके मुँह अच्छी तरह बंद करके प्राण वायु को नाक से खींच

कर, तीव्र गति से छोड कर ब्रह्म रंध्र तक व्याप्त करके, मेघ ध्वनि के साथ हृदय तक वायु को फैलाकर फिर उसे छोड कर, फिर वायु को खींचकर और छोड कर, तीसरी बार भी ऐसा ही करके रेचन करते हुए भट्टी की धौंकनी की तरह अंदर लेकर और बाहर छोड कर वायु को बुद्धि के मार्ग से चलन करते रहना, कभी थकावट महसूस होती है तो सूर्यनाडी द्वारा वायु को छोडने से थकावट दूर होती है। पेट शांत होता है। उंगलियों से नाक को बंद करके वायु का कुंभक करके छोडने से वात, पित्त, श्लेष्म दोष दूर हो जाते हैं। जठराग्नि की वृद्धि होती है। मल विमोचन भी होता है। ब्रह्म, विष्णु, रुद्र ग्रंथियों का भेदन भी होता है। यह अत्यंत सुखप्रद भस्त्रिका कुंभक है। अब भ्रमरिका कुंभक के बारे में बताऊंगा। सुनो।

6. भ्रमरिका कुंभक :

पुरुष मिलिंद ध्वनि की तरह सांस खींच कर भ्रमर के आनंद से की गयी ध्वनि के रूप में नाक से क्रम से रेचन करना चाहिए। इसे क्रम से अभ्यास करना चाहिए। इस अभ्यास से चित्त में आनंद होता है। यही भ्रमरिका कुंभक है।

7. मूर्छा कुंभक :

अब मूर्छा कुंभक के बारे में बताऊंगा। सुनो। सांस को खींच कर जलांधर को पकडे रहने से मन में सद्बोध पैदा होकर, अंदर पैठकर जीव से मन को भरते जाना ही मूर्छा कुंभक है।

8. केवल कुंभक :

अब केवल कुंभक के बारे में बताऊँगा। सुनो। रेचक, पूरक, कुंभक करते हुए स्वभाव से वायु धारण करके, निजबोधानंद में मग्न होकर रहने से वह केवल कुंभक होता है। ऐसे कुंभक का अभ्यास करके सिद्ध बननेवाले को तीनों लोकों में कोई दुर्लभ कार्य नहीं होता है। वह सर्व स्वतंत्र भी होता है।

ऐसे हठ योग में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, अष्टांग योग, त्रिबंधाष्टक कुंभक, मुद्रा आदि साधनों से द्वादशाब्धों तक अभ्यास करने से सिद्धि प्राप्त होती है। वह ऐसा है कि प्रथमाब्ध में मनुष्य रोगरहित होता है। द्वितीयाब्ध में कवित्व करने लगता है तृतीयाब्ध में विष को जीतता है, चतुर्थाब्ध में भूख, तृष्णा, निद्रा, थकावट

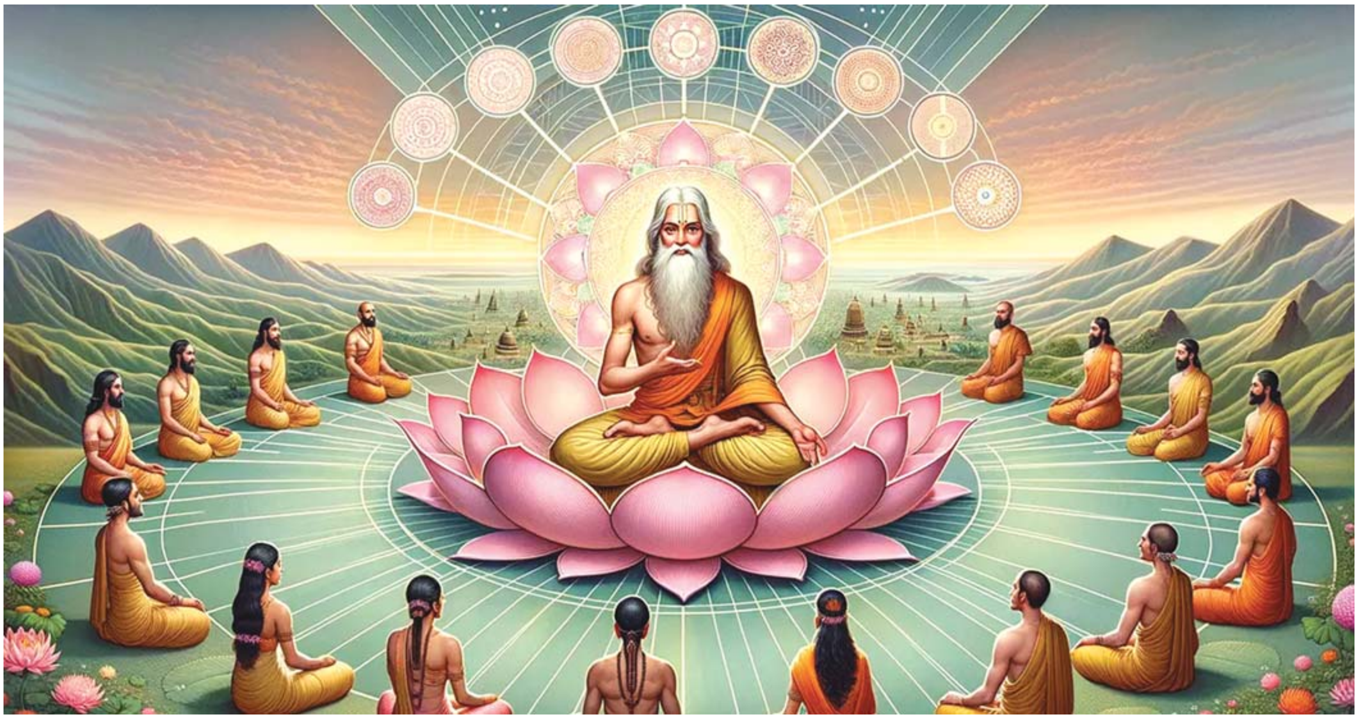

को जीतता है, पंचमाब्ध में वाक्शुद्धि को प्राप्त करता है। षष्टाब्ध में खड्गभेद्य बनता है, सप्ताब्ध में भूमि से ऊपर उठता है, अष्टमाब्ध में ऐश्वर्य संपन्न होता है, नवमाब्ध में भोगवान बनता है, दशमाब्ध में मनोवेगवान बनता है, एकादशाब्ध में विश्ववशत्वं बनता है। द्वादशाब्ध में साक्षादिशत्व बनता है। यह हठ योग का क्रम है।

और मैं राजयोग के बारे में बताऊंगा। सुनो। उसे सूक्ष्माष्टांगपूर्वक अभ्यास करना चाहिए।

राज योग (सूक्ष्म अष्टांगयोग पूर्वक) :

आहार निद्रादि दर्शेंद्रियों को दबाकर शांति को प्राप्त करना यम है। निश्चल गुरुभक्ति, निस्संशय, योगासक्ति, तृप्ति, एकांत वास की इच्छा, वैराग्य भाव को ग्रहण करना नियम है। सहज सुख देनेवाले आसन में रहना, निस्पृहत्व को प्राप्त करना, आत्मा को दबाकर ठीक करके खडे होना आसन है। प्रकट रेचक, पूरक और कुंभक समेत श्वासों को अप्रयत्न रूप से जमाना अनिरुद्ध कुंभक है। प्राण को स्थिर रूप में रोककर जगत को सत्य और नित्य मानना प्राणायाम है। अंतर्मुखी होकर निर्मल मन से मन में उत्पन्न होनेवाले मनोविकारों से अलग रहना, ऐसे विकारों को त्याग करके निर्व्यापार रहना ही प्रत्याहार है। स्वस्वरूपानुसंधान भाव से द्वितीय रहित आत्मानुभव में सर्वजगत को आत्म के रूप में मानना, सकल भूत-दया के साथ समरसता से नित्य तृप्त होना ध्यान है। अंतर - बाह्य प्रकाश को एक सूत्र में, स्वतेजोमय रूप में परमात्मा को लेकर दृढ संकल्प करके, मन को शांत रखना ही धारण है। उस धारण के अभ्यास में चित्त को एकाग्रता से रखने पर, जीवात्मा और परमात्मा में जल शर्कर न्याय से मिला कर रखना, ऐसा अनुभव करना ही समाधि है। ऐसे सूक्ष्माष्टांग से प्रकाशित होनेवाले राजयोग के लक्षणों को संक्षेप में बताऊंगा। वे ऐसे हैं कि हंसाक्षर, सिद्धासन, केवल कुंभक, नाद इन चारों से राज योग प्राप्त होता है। उस में 1. सांख्य 2. तारक 3. अनुनस्क त्रिविध हैं। इन में सांख्य योग ऐसा है।

1. सांख्य योग :

पंचतन्मात्राएँ, पंचभूत, पंचीकृत प्रबल होकर उत्पन्न होनेवाले ससलेंद्रीय, सर्वविषयजाल, गुणत्रय, काम विकारादि, देह अशाश्वत, ऐसा सोचकर जाननेवाली जानकारी मैं हूँ ऐसा निश्चय करके, विक्षेपादि आवरणों को दबाकर, अपने आप में अपने को ढूंढ ढूंढ कर पहचान कर अचल वृत्ति से रहना सांख्य योग है। गुरु मुख से इसे अभ्यास करना चाहिए। इस प्रकार सांख्य योग के बारे में जानकर तारक का अभ्यास करना चाहिए। वह ऐसा है कि।

2. तारक योग-लक्ष्यत्रय :

अर्धनिमिलित नेत्रों से या दोनों नेत्रों को बंद करके, परमात्मा को गुरु की कृपा से अंदर ही दर्शन कर सकते हैं। चंद्र और सूर्य के रहते, सहज ही चमकनेवाले ताराओं में विमल बिंदु के रहने से वह तारक योग से प्रकाशवान लक्ष्य त्रय बनता है। वह तारक योग बाह्य, मध्य, अंतर्लक्ष्य के रूप में रहता है। उन में बाह्य लक्ष्य कैसा है? सुनो।

क्रमशः

अक्षर यज्ञ

- श्री वेमुनूरि राजमौलि

अक्षर वाग्रूप में बदल कर शब्दों के रूप में संचरण करते हैं। अखंड सच्चिदानंद के रूप में महर्षियों ने अक्षर की आराधना की। वाग्देवी के रूप में उपासना की। सरस्वती के रूप में आराधना की। भाषाएँ अलग-अलग होने पर भी भावाभिव्यक्ति का मूलाधार अक्षर ही है। छप्पन अक्षरों की तेलुगु-वर्णमाला ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी से बहुल भाषा-संपत्ति प्रदान की। बच्चों को अक्षराभ्यास कराना हमारा सनातन संप्रदाय है। ''ओं'' से प्रारंभ करके 'श्रीकार' लिखाकर बाद में ''नमः शिवाय'' लिख कर दिद्दिंचुटा (उसी के ऊपर दो-चार बार लिखाना) कुछ लोगों का संप्रदाय है। कुछ और लोग ''ओं श्री'', ''न'', ''म'' से अक्षराभ्यास प्रारंभ कराते हैं। कोई भी पद्धति क्यों न हो वह तो अक्षराभ्यास का सुमुहूर्त ही है।

सृष्टि का मूल होकर एक ही अक्षर के रूप में उद्भूत प्रणवनाद ''ओंकार'' है। इसे वेद ने ''एकाक्षर-ब्रह्म'' के रूप में वर्णन किया। शून्य में, समुद्र के होरु में, वायु की ध्वनि में, मंदिर के घंटानाद में, एकाक्षर-शब्द, ''ओंकार'' के रूप में सुनायी देता है। वह परमात्मा की वाणी है। दूसरे अनेक एकाक्षर शब्द रहने पर भी मोक्ष साम्राज्य के लिए प्रामाणिक रूप से ''ओंकार'' को ही लेते हैं। अनेक स्तोत्रों में दो अक्षर वाले मंत्र मिलते हैं। चाहे कितने ही अक्षर क्यों न हों, मंत्र का प्राण, अक्षर में निहित ''बीजशक्ति'' है। उन्हें ही ''बीजाक्षर'' कहते हैं। धान के सारे बीज उग नहीं सकते। बीजशक्ति वाले बीज ही, पुनरुत्पत्ति को प्राप्त होते हैं। राम, कृष्ण, शिव, हरि, हर... जैसे दो अक्षर वाले मंत्र बीजाक्षर समाश्रित हैं। 'ओं नमः शिवाय' पंचाक्षरी है। 'ओं नमो नारायणाय' अष्टाक्षरी है। 'ओं नमो भगवते वासुदेवाय' जैसे द्वादशाक्षरी भगवन्नाम स्मरण कराने वाले तारक मंत्र हैं।

चौबीस अक्षरों का गायत्रीमंत्र... आगम शास्त्र सम्मत वेदमंत्र है। महर्षि वाल्मीकि ने गायत्री मंत्र में से, क्रमानुरूप प्रत्येक अक्षर को लेकर एक-एक सहस्र श्लोकों के हिसाब

से चतुर्विंशति सहस्र (चौबीस हजार) श्लोकों वाली रामायण की रचना की। यह आदिकाव्य के रूप में, मोक्ष व सामाजिक धर्म प्रदान करने वाले इतिहास के रूप में, युगों पर्यंत रहनेवाली शक्ति के रूप में विलसित होने का मुख्य कारण यही है; ऐसा बुजुर्ग लोग कहते हैं। जिस प्रकार बीज में शाखोपशाखाओं से व्याप्त होनेवाला वृक्ष छिपा रहता है, उसी प्रकार अक्षर में महोन्नत अर्थ निक्षिप्त हुए हैं। मानव को अक्षर विवेकी, संस्कारवान बनाता है। अक्षर विन्यास अनेक हैं। वे अनंत कला-रूप हैं; अखंड विज्ञान-भंडार हैं; दैवी स्वरूप हैं।

शतकों के रूप में दर्शन देने वाली अक्षर-संपत्ति ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी से मानव को विवेकज्ञान प्रदान किया। वेमन शतक, दाशरथी शतक, कालहस्तीश्वर शतक... जैसे अनेक शतक काव्यों ने मानव को सन्मार्ग दिखाया। वर्तमान स्थिति से उबारकर उन्नत स्थिति तक पहुँचानेवाले साधन बनकर रहे। पद्यों में स्थित कवितात्मक अक्षरों ने अपने हृदयों में मधुरानुभूति व रसानुभूति पहुँचायी। तेलुगुवालों के पद्य-कर्षक बम्मेर पोतना के भागवत-पद्य श्री सरस्वती के अक्षर-सुमहार हैं। आनंद प्रेरक हैं। चमत्कार पूर्वक एक-कवि ने ऐसा वर्णन किया कि पद्य एक सोने की थाली है; वर्णन, छंद, सौंदर्य, कथागमन, अतिशय, आर्द्रता इत्यादि उसमें परोसे हुए मधुर पदार्थ हैं। उसका आस्वादन करके, अनुभव करके स्वर्णमय थाली जैसे पद्य को सुरक्षित रख लेना चाहिए। अगली पीढी के लिए हमारी संस्कृति के रूप में आरक्षित रखना चाहिए।

चाहे ग्रांथिक हो या व्यावहारिक, अक्षर विचार (सोच) का लोचन (ज्ञान-नेत्र) है। अक्षरों की धार से निर्भय हो वास्तविकता प्रकट करने वाली रचना अवश्य मानव को सही रास्ते पर ले चलती है। अच्छी रचना का प्रत्येक अक्षर मनुष्य को सुधारेगा। विचक्षणा ज्ञान से सोचने का सामर्थ्य देगा।

इतिहास, पुराण, उपनिषत्, वेद... इनके रूप में मानव-समाज को हित पहुँचाने का संस्करण ही 'अक्षर यज्ञ' है। अक्षर संस्कृति-सौध का महाद्वार है।

स्वस्ति।

ऋषि-मुनि

ऋषि पराशर

- डॉ.जी सुजाता

महान वेदज्ञ, ज्योतिषाचार्य, स्मृतिकार एवं ब्रह्मज्ञानी ऋषि पराशर के पिता का नाम शक्तिमुनि और माता का नाम अद्यश्यंती था। ये महर्षि वशिष्ठ के पौत्र थे। पराशर एक मंत्रद्रष्टा ऋषि, शास्त्रवेत्ता, ब्रह्मज्ञानी एवं स्मृतिकार है। प्राचीन भारतीय ऋषि-मुनि परंपरा की श्रेणी में एक महान ऋषि हैं। ऋषि पराशर के पिता का देहांत इनके जन्म के पूर्व हो चुका था अतः इनका पालन-पोषण इनके पितामह वसिष्ठ जी ने किया था। ऋषि पराशर बाष्कल तथा याज्ञवल्क्य के भी शिष्य थे। धार्मिक कथाओं के अनुसार महाभारत काल के दौरान पराशर ऋषि के पिता को राक्षस कल्माषपाद ने खा लिया था।

पराशर के पिता

एक बार पराशर ऋषि के पिता पूर्व दिशा से शक्ति एकायन मार्ग द्वारा आ रहे थे। वहीं, दूसरी तरफ यानी पश्चिम दिशा से राजा कल्माषपाद आ रहे थे। शक्ति एकायन मार्ग बहुत ही संकरा था। वह इतना पतला था कि उस रास्ते पर से एक बार में एक ही व्यक्ति निकल सकता था। ऐसे में दूसरी दिशा वाले व्यक्ति को हटना जरूरी था। लेकिन दोनों ही अपने मार्ग से हटना नहीं चाहते थे क्योंकि जहाँ राजा को राजदंड का अहंकार था। वहीं, शक्ति को अपने ऋषि होने का अहंकार था। ऋषि, राजा से बड़ा ही होता है। ऐसे में ऋषि को लगा कि राजा हट जाएगा। लेकिन राजा नहीं हटा। बल्कि उन्होंने ऋषि शक्ति को कोड़ों से मारना शुरू कर दिया। राजा के कर्म बिल्कुल राक्षस जैसे थे। ऐसे में राजा को शक्ति ने शाप दे दिया। इस शाप के प्रभाव से राजा कल्माषपाद तक्षण ही राक्षस हो गए। जब राजा राक्षस बन गया तब उसने अपना पहला निवाला ऋषि को ही बनाया और ऐसे ऋषि शक्ति की जीवनलीला समाप्त हो गई।

जब यह बड़े हुए तो माता अदृश्यंती से इन्हें अपने पिता की मृत्यु का पता चला कि किस प्रकार राक्षस ने इनके पिता का और परिवार के अन्य जनों का वध किया। यह घटना सुनकर वह बहुत क्रुद्ध हुए। राक्षसों का नाश करने के लिए उद्यत हो उठे। उन्होंने राक्षसों के समूल नाश हेतु राक्षस-संहार यज्ञ का आयोजन किया। इस यज्ञ के प्रभाव से सभी राक्षस खींचे चले आए और यज्ञ की अग्नि में भस्म हो गए। इस प्रकार इस महा विनाश और दैत्यों के वंश ही समाप्त हो जाने को देखकर पुलस्त्य सहित अन्य ऋषियों ने पराशर ऋषि को समझाया कि इस यज्ञ को रोक दें। साथ ही उन्हें अहिंसा का उपदेश भी दिया। उन्हें समझाया कि बिना किसी दोष के राक्षसों का संहार सही नहीं है। सभी की प्रार्थनाओं को सुनकर पराशर ऋषि ने यज्ञ रोक दिया।

धार्मिक कथाएँ हैं कि ऋषि पराशर ने निषादाज की कन्या सत्यवती के साथ उसकी कुंआरी अवस्था में समागम किया था जिसके चलते 'महाभारत' के लेखक वेदव्यास का जन्म हुआ। बाद में सत्यवती ने राजा शांतनु से विवाह संपन्न किया था।

पराशर द्वारा रचित ग्रंथ

पराशर ऋषि ने अनेक ग्रंथों की रचना की जिसमें से ज्योतिष के ऊपर लिखे गए उनके ग्रंथ बहुत ही महत्वपूर्ण रहे। जब भी ज्योतिष शास्त्र की बात होती है सबसे पहले ऋषि पराशर का नाम लिया जाता है क्योंकि इन्होंने ही वैदिक ज्योतिष शास्त्र का निर्माण किया था। भारतीय ज्योतिष के प्रवर्तकों में महर्षि पराशर अग्रगण्य हैं। ज्योतिष के

विषय में उनके द्वारा रचित 'बृहदपराशरहोराशास्त्र' अंतिम निर्णायक ग्रंथ माना जाता है। इन्होंने फलित ज्योतिष सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। कहा जाता है, कि कलियुग में पराशर के समान कोई ज्योतिष शास्त्री नहीं हुए।

ऋग्वेद के अनेक सूक्त इनके नाम पर हैं, ऋग्वेद में पराशर की कई ऋचाएँ हैं।

1) बृहत्पराशर होरा शास्त्र, 2) लघुपाराशरी, 3) बृहत्पाराशरीय धर्मसंहिता, 4) पराशरीय धर्मसंहिता (स्मृति), 5) पराशर संहिता (वैद्यक), 6) पराशरीय पुराणम्, 7) पराशरौदितं नीतिशास्त्रम्, 8) पराशरोदितं, वास्तुशास्त्रम्।

कृषि - पराशर

तीन खंडों में लिखा गया यह लघु ग्रंथ वृष्टि ज्ञान, मेघ का प्रकार, कृषि भूमि का विभाजन, कृषि में काम आने वाले यंत्रों का वर्गीकरण आकार - प्रकार, वर्षा जल के मापन की विधियां, हिंदी महीने पूस के महीने में वायु की गति व दिशा के आधार पर 12 महीनों की बारिश का अनुमान व मात्रा का प्रतिशत निकालने की विधि। बीजों का रक्षण, जल रक्षण की विधियाँ कृषि में काम आने वाले वाहक पशुओं की देखभाल पोषण व उनके प्रबंधन के संबंध में अमूल्य जानकारी निर्देश दिया गया है।

ऋषि पराशर ग्रंथ में लिखते हैं जीवन का आधार कृषि है। कृषि का आधार वृष्टि अर्थात बारिश है हर किसान को बारिश के विषय में जरूर जानना चाहिए। कृषि के लिए जल की आवश्यकता को देखते हुए तथा जल के प्रमुख साधन होने के कारण वृष्टि ज्ञान को पराशर ने प्रमुखता दी है तथा इसी क्रम में बतलाया है कि विभिन्न ग्रहों का वर्षा पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार मेघों के प्रकार का वर्णन, अलग-अलग ऋतुओं में होने वाली वर्षा के लक्षणों का वर्णन तथा अनावृष्टि के लक्षणों का भी पराशर ने वर्णन किया है।

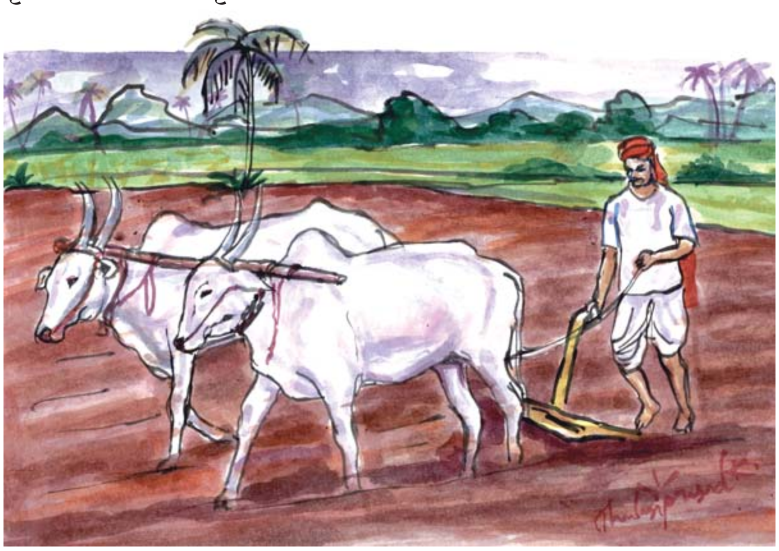

ऋषि पराशर ने अपने ग्रंथ के द्वितीय खंड वृष्टि खंड में बादलों को 4 भागों में वर्गीकृत किया है। बादलों का यह वर्गीकरण उनके आकार के आधार पर किया गया है।

आवरत मेघ, सम्प्रत मेघ, पुष्कर मेघ, द्रोण मेघ। पहले वाला मेघ एक निश्चित स्थान में बारिश करता है दूसरा मेघ एक समान बारिश करता है तीसरे मेघ से बहुत कम वर्षा होती है चौथे मेघ से उत्तम वर्षा होती है।

पूरे वर्ष के लिए बारिश की मात्रा के लिए ज्ञात करने के लिए एक विधि विकसित की... इसके तहत उन्होंने वर्णन किया है कि पूस महीने के 30 दिन को 60 घंटे के 12 भागों में विभक्त कर प्रत्येक दिन के सुबह शाम के 1.00 घंटे में वायु की गति व दिशा के आधार पर पूरे वर्ष के लिए वर्षा की मात्रा वह किन किन तिथियों में वर्षा होगी उसका विश्लेषण किया जा सकता है।

ऋषि पराशर ने कृषि भूमि को तीन भागों में विभाजित किया अनूप कृषि भूमि, जांगल कृषि भूमि, विकट भूमि।

पहली से दूसरी दूसरी से तीसरी भूमि को कृषि के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया। कृषि खंड में उन्होंने बताया किस महीने में बीजों का संग्रह करना चाहिए बीजों की रक्षा कैसे करनी चाहिए बीजों का रोपण किस विधि से होना चाहिए... कृषि कार्य में खगोलीय घटनाओं नक्षत्र आदि के प्रभाव का भी उन्होंने विस्तृत वर्णन किया है।

ग्रंथ के अध्ययन से पता चलता है कि पराशर के मन में कृषि के लिए अपूर्व सम्मान था। किसान कैसा होना चाहिए, पशुओं को कैसे रखना चाहिए, गोबर की खाद कैसे तैयार करनी चाहिए और खेतों में खाद देने से क्या लाभ होता है, बीजों को कब और कैसे सुरक्षित रखना चाहिए, इत्यादि विषयों का सविस्तार वर्णन इस ग्रंथ में मिलता है।

महर्षि पराशर का जीवन दिव्य, अलौकिक और अद्वितीय है, उन्होंने धर्म शास्त्र, नीतिशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद और वास्तुकला जैसे जटिल विषयों का ज्ञान प्राप्त किया और उन्हें समाज के उत्थान के लिए प्रदान किया।

पराशर ऋषि का आश्रम व मंदिर

जालौन जिले की कालपी के समीप ही परासन नामक ग्राम में ऋषि पराशर की तपःस्थली रही है। पराशर ऋषि यहाँ पर धार्मिक अनुष्ठान किया करते थे अतः बाद में उन्हीं के नाम पर इस स्थान का नाम पराशर पड़ा। इस गांव में पराशर ऋषि का आश्रम और मंदिर है इसके अलावा दो अन्य शंकर जी के मंदिर हैं। आश्रम में पराशर ऋषि की मूर्ति प्रतिष्ठित है।

पराशर झील

पराशर झील हिमाचल प्रदेश के, मंडी जिले से 47 किलोमीटर उत्तर में स्थित है, जिसमें तीन मंजिला शिवालय मंदिर है जो ऋषि पराशर को समर्पित है। इसमें एक तैरता हुआ द्वीप है। गहरे नीले पानी वाली यह झील ऋषि पराशर के लिए पवित्र मानी जाती है और पौराणिक कथा के अनुसार ऐसा माना जाता है कि ऋषि पराशर ने इस झील के किनारे तपस्या की थी इसलिए इसका नाम पराशर झील पड़ा।

कहानी कहती है कि पांडव भाइयों में से एक भीम ने झील का निर्माण किया था। कुरुक्षेत्र महाभारत युद्ध के बाद पांडव भगवान कमरूनाग के साथ लौट रहे थे। जब वे इस स्थान पर पहुँचे, तो कमरूनाग को शांत वातावरण पसंद है और उन्होंने हमेशा यहीं रहने का फैसला किया। तो, भीम ने एक पहाड़ पर अपनी कोहनी मारी और जमीन में बड़ा गड्ढा कर दिया। यही गड्ढा पराशर झील बन गया। झील की अधिकतम गहराई अज्ञात बनी हुई है। महर्षि पराशर के तप की साक्षी भूमि और उसका अद्भुत सौंदर्य आज भी मौजूद है जो सबको अपनी ओर आकर्षित करता है।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

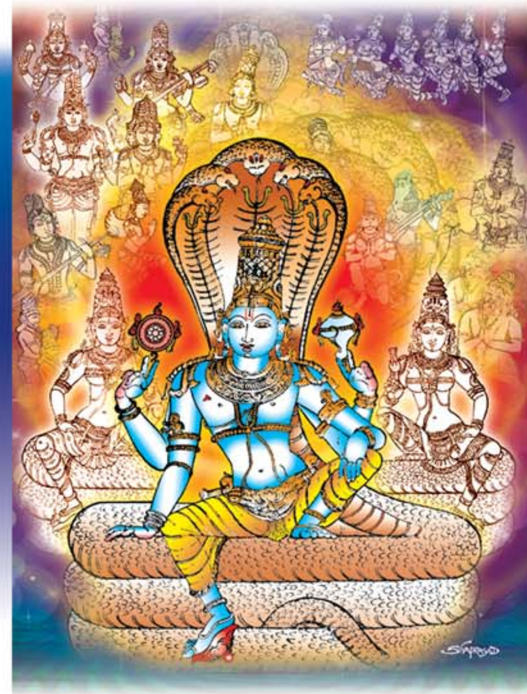

3. तोण्डै नाडु दिव्य क्षेत्र

54) तिरुक्कळवनूर - (कांचीपुरम)

पेरिय कांचीपुरम में (कामाक्षी अम्मन मंदिर) (ऊरहम, उलहळन्द मंदिर के पास) के अन्दर देवी के गर्भगृह के बाई तरफ हैं।

मूलमूर्ति - आदिवराह पेरुमाल। कळवर, पश्चिमाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - अञ्चिलैवल्लि नाच्चियार।

तीर्थ - नित्य पुष्करिणी (अब नही)।

विमान - वामन विमान।

प्रत्यक्ष - अश्वत्थ नारायणन्

यहाँ एक छोटी मूर्ति हैं। लेकिन दाई तरफ कोने में एक वराहमूर्ति है। (कामाक्षी अम्मन मंदिर पुष्करिणी के उत्तर - पूर्व कोने में - तीन स्तरवाला एक सन्निधि है। जिसमें तीन में खडे, आसीनस्थ, शयन मुद्रा में तीन मूर्तियाँ हैं।)

मंगलाशासन - 1 आल्वार; 1 दिव्य पद।

55) तिरुप्पवळवण्णर - (कांचीपुरम)

यह दिव्य क्षेत्र पेरिय कांचीपुरम रेल्वे स्टेशन के पास एकांबर मंदिर के पास है। इसके एक कि.मी. की

दूरी पर पच्चैवण्णर सन्निधि है - लेकिन यह मंगलाशासित क्षेत्र नहीं है।

लेकिन दोनों सन्निधियों को एक दिव्य क्षेत्र के रूप में मानकर दर्शन करने की परंपरा है। दोनों आमने सामने है।

मूलमूर्ति - पवळवण्ण पेरुमाळ, पश्चिमाभिमुखी। खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - पवळवल्लि - (अलग सन्निधि)।

तीर्थ - चक्र तीर्थ।

विमान - प्रवाळ विमान।

प्रत्यक्ष - अश्विनी देवता - पार्वती।

निकट पच्चैवण्णर मंदिर में, आदिशेषन पर आसीन पच्चैवण्णर परमपदनाथ के रूप में दर्शन देते हैं। भृगु महर्षि को प्रत्यक्ष।

मंगलाशासन - 1 आल्वार; 1 दिव्य पद।

56) तिरुप्परमेश्वर विण्महरम (कांचीपुरम)

कांचीपुरम-वैकुण्ठपेरुमाल मंदिर यह दिव्य क्षेत्र पेरिय कांचीपुरम में कांचीपुरम रेल्वे स्टेशन से थोडी दूरी पर है।

मूलमूर्ति - परमपद नाथ - वैकुण्ठ नाथन। पश्चिमाभिमुखी। आसीनस्थ मुद्रा में दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - वैकुण्ठवल्लि (अलग सन्निधि)।

तीर्थ - ऐरम्यद तीर्थ - (व्रजा पुष्करिणी के रूप में)।

विमान - मुकुन्द विमान - तीन तल्लो का अष्टांग विमान।

प्रत्यक्ष - एक पल्लवराजा।

मंगलाशासन - 1 आल्वार; 10 दिव्य पद।

क्रमशः

(युवा)

'गीता' ज्ञान-भंडार

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

हे प्रिय बालक और बालिके! हे युवा लोगो! हे समस्त स्त्री-पुरुष!!

सावधान से सुनो। हम सबने एक-एक जन्म पाया हुआ है। यह जन्म हमें अपने-अपने पिछले जन्मों के पाप और पुण्य के आधार पर मिला हुआ है। हम इस जन्म को लेकर, अपनी-अपनी जिंदगी जीते हैं।

जीवन के लिए कुछ आदर्श चाहिए होते हैं, जो अपने अनुभवों पड़ोस के लोगों के जीवन-विधान, गुरुओं तथा अनुभवी लोगों की सलाहों आदियों के माध्यम से प्राप्त होते रहते हैं।

आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व घटे ''कुरुक्षेत्र महासंग्राम'' के प्रथम दिन भारी सेनाओं के बीचों बीच अपने बन्धू ''अर्जुन'' को साक्षात् परंधाम श्रीकृष्ण परमात्मा के द्वारा उपदेशित ''भगवद्गीता'' में जीवन के उत्तम आदर्श भरे पडे हैं।

हे प्रिय विद्यार्थी! भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा प्रवचित ''गीताशास्त्र'' एकमात्र अर्जुन-वीर के लिए ही नहीं, बल्कि हम-जैसे साधारण जीवियों के लिए भी है।

अतः गीताशास्त्र तेरे ही लिए है।

पढ़ कर, आकलन कर दुःखों का निवारण पाओ एकमात्र गीता ही तेरी सारी समस्याओं का समाधान जानो। यह किसी एक जनवर्ग से संबंधित बोध अथवा ज्ञान नहीं, वरन समस्त मानव-जाति से संबंध रखता है।

गीता और गान्धीजी :

गान्धीजी के लिए तो भगवद्गीता माताजी के समान था, जिन्होंने अपने जीवन के समस्त उलझनों का समाधान गीताशास्त्र से ही पाया था। गीताशास्त्र की एक प्रति हर हमेशा गान्धीजी के साथ होती थी।

अतः तुम भी उनके अनुसरण कर आनंद, सुख और शांतियों के साथ तथा संतृप्ति से जीवन जीना सीखो।

गीता के उपयोग :

गीताध्ययन से तुम यह जान जाते हो कि तुम यह शरीर नहीं बल्कि आत्मा हो! और, तेरे द्वारा अनुभवित ये कष्ट और दुःख केवल इस देह से संबंधित हैं। आत्मा पर जब तुम अपना मन स्थापित कर पाओगे, तो तेरे दुःख और संकट धूल में मिल जायेंगे। अब आगे चलते जाओ और संसार को जीतो, जैसा अर्जुन ने जीता था।

धन और दौलत, जमीन-जायदाद, कीर्ति-प्रतिष्ठा, नाम-प्रख्याति सब तेरे वश होयेंगे।

तुम सबका साधन कर पाओगे! और, आगे-आगे तुम यह भी जान जाओगे, बन्धू, कि ये सब संपादित वस्तु अप्रयोजक हैं। तुम उन सबको त्याग देना भी जान जाओगे।

1. मोह-शांति

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।

स्थितोऽस्मि गतसंदेहः करिष्ये बचनं तव॥

(भगवद्गीता - 18-73)

भावार्थ :

जीवन के मार्ग में उपयोगित विषयों से संबंधित भगवान को जो कहना था, सो कह दिया। अर्जुन के सारे संदेह चकनाचूर हो गये। अर्जुन अब मात्र जीवात्मा बन कर खड़ा हो गया।

अब शुद्धात्मा अर्जुन कह रहा है - ''हे, अच्युत! अब मेरा मोह नष्ट हो गया। संसार के इस जीवन-विधान के बंधन अब टूट गये। मुझे परिपूर्ण स्मृति की लब्धि मिल गयी।

हे, परंधाम! तेरे कृपा-पूर्वक प्रसादन से मुझे इन सब का ज्ञान प्राप्त हो गया। अब मैं स्थिर हूँ। अटल हूँ। मेरे सारे संदेह (जीवन-मात्र से संबन्धित) निवृत्त हो चले हैं। अब आज्ञा दो परमात्मन! मैं तुम्हारी हर आज्ञा का पालन करूँगा।''

विशेषार्थ :

अर्जुन नरों का प्रतिनिधि था। वह उत्तम नर था।

अधर्म मनुष्यों को प्रापंचिक मोह सहज होता है। अतएव, अल्प ज्ञान वालों को चाहिए कि वे इस प्रापंचिक मोह-बन्धनों से छुटकारा पाना आवश्यक है।

उत्तम नरों के लिए ''आध्यात्मिक मोह'' भगवान को दरसने में प्रतिबन्धक बन खड़ा हो जाता है। इसलिए विज्ञान पुरुषों को चाहिए कि वे आध्यात्मिक मोहजाल में फंस न होकर, विन्मुक्त बन कर अपने को विश्वात्मा में बिलगने का प्रयत्न करना चाहिए।

मनुष्य जब आपने आप को पहचानना जान लेता है, तो यह साध्य होताता है उसे कि सांसारित अथवा आध्यात्मिक मोह से छुटकारा कैसे पाये जाय।

2. कर्म - शुद्धि

शमो दमस्तपः शौचं क्षांतिरार्जवमेव च।

ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्मस्वभावजम्॥

(गीताशास्त्र - 18-42)

भावार्थ :

गीताशास्त्र मानव को ''ब्राह्मण'' बनने की रीति बताता है।

वैसे, हर कोई ब्राह्मण बन सकता है। ब्राह्मण एक जात नहीं है। ब्राह्मण एक रीत है; रिवाज है; एक संप्रदाय है और ब्राह्मणत्व एक आचरण है।

उपरोक्त गीताशास्त्र का श्लोक अत्यंत प्रसिद्ध एवं प्रमुख तत्व से पूरित है।

इस प्रसिद्ध श्लोकराज में मनुष्य के पवित्र कर्मों पर ध्यान दिया गया है, जिनके आचरण से मनुष्य परिशुद्ध बन सकता है और वह ब्राह्मण बन सकता है, क्योंकि ये आचरण से ब्रह्मसूत्र हैं।

आइये देखते हैं कि ब्राह्मण के पूत-पवित्र स्वाभाविक कर्म क्या हो सकते हैं -

''ब्राह्मण वह है जो अंतःकरण (मन) को अपने काबू में रखता है। यह ''शम'' कहलाता है। इन्द्रियों को वश में करता है, जो ''दम'' कहलाता है।

ब्राह्मण हर हमेशा ''धर्म'' का पालन करता है। धर्म का पालन इतना आसान काम नहीं। अनेक कष्ट-नष्टों का उसे सामना करना पड़ेगा। फिर भी, ब्राह्मण धर्म के

निर्वहण में भले ही कष्ट-नष्टों का सामना करना भी पड़े, तो पीछे न हट के धर्म का पालन करेगा।

ब्राह्मण बाह्य एवं अभ्यंतर को साफ रखेगा। शुचित्व ही परमात्मा है। अतएव, ब्राह्मण मन-मंदिर की सफाई पर ध्यान देता है और अभ्यंतर यानी आचरण को बिना मैल का रखेगा।

वह दूसरों के अपराधों की क्षमा करता है।

वह जानता है कि अपराध अनजाने में घट जाता है। अतः वह अपराध को माफ कर देता है और अपराधी को अपना लेता है।

ऋजुमार्ग-जीवन ब्राह्मणमतावलंबी का सर्वोत्तम गुण बना हुआ होता है। वह मन को साफ रखेगा ही, साथ-साथ अपनी देह की शुद्धि पर भी ध्यान रखेगा। ब्राह्मणमतावलंबी मनुष्य अपने इन्द्रियों को भी सरल रखेगा। उसके इन्द्रिय विपरीत भावसंचलित न हो करके काफी सरल रहेंगे।

ब्राह्मण सनातन धर्म का विश्वास मानने वाला मनुष्य होता है। वह वेदों तथा शास्त्रों में अटूट विश्वास रखता है। भगवान का वह नितान्त विश्वासी रहेगा। लोक-परलोक की चिंता उसे होगी और वह ''परलोक-सिद्धि'' में आस्था रखता है।

और भी, ब्राह्मण वेदों, वेदांगों एवं शास्त्रों का अध्ययन किया हुआ होता है और वेद-शास्त्रों के अध्यापन में जुटा होता है। वह परतत्व का ज्ञान रखते हुए परमात्मा का अनुभव एवं साक्षात्कारों की कला जानता है।''

विशेषार्थ :

हर मनुष्य को ब्राह्मण बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

इससे मनुष्य में शुचित्व बढ़ता है। शुचित्व से मनुष्य स्वच्छ बनता है और स्वच्छता से मनुष्य में ''दैवत्व'' की सिद्धि प्राप्त होगी।

आचरण की शुद्धि से दैवत्व की सिद्धि मिलती है।

इसका एकमात्र उदाहरण है - भगवान श्रीरामचन्द्रजी!! शुच बनने के लिए मनुष्य अपने इन्द्रियों को काबू में पायेगा।

दोहा :

कह रहीम तन हाथ में, मनसा कहुँ किन जाहिं?।
जल में जो छाया परे, काया भीजति नाहिं!।। (रहीम)

इसका यह भाव रहा है कि जो मनुष्य अपनी देश पर काबू पाया हुआ होता है, उसे पाप-पुण्यों के सिलसिले में ''मन'' को शिकायत करने की आवश्यकता नहीं होती।

इसके उदाहरण में रहीम कहता है - ''जल पर छाया पड़ने पर काया (शरीर) थोड़ी ही भीगती है, रे मानव!??!...''

परिसमाप्ति :

भगवद्गीता जीवन का आदर्श है। आपत्कालीन समय में भगवान ने स्वयं मानवालि के आचरण-हेतु अनन्य भाव-बंधुर वाक्पटुता के साथ महत्तर आचरण को सुझाया है। गीताशास्त्र आचरण का 'मैग्नकॉर्टा' है। जीवन में क्या है, क्या नहीं है। क्या करें, क्या नहीं करें। इसका गीताशास्त्र में स्पष्टतया निर्देश हो पाया है।

बहुत काल से भगवद्गीता मानव के जीवन के पथ का बृहत् कांति-रेखा बन कर विद्यमान है! जब भी कोई जीवन-संशय उठ खड़ा हुआ, तो गीता से संपर्क हुआ, तो समाधान मिल गया। समस्या सुलझ गयी। जीवन का रथ पथ-प्रदर्शन पाते हुए आगे की तरफ दौडता ही रहा! दौड़ता ही रहा!! ॐ शांतिश्शांतिश्शांतिः!!

समस्त सन्मंगलानिसंतु!! सर्वेजनाः सुखिनो भवंतु!!

उत्तर आर्काट जिले का 'मान्युवल' (1880) जो ए.एफ. कोक्स से संकलित किया गया और एच.ए. स्टुवर्ट द्वारा 1895 में संपादित किया गया है उसके 'खंड' II में 'तिरुमल' शीर्षक के अधीन पर्वत श्रेणियों और मंदिर पर एक विवरण है। उसमें कहा गया है कि 'इस में कोई संदेह नहीं हो सकता है कि मूलतः मूलविराट मूर्ति पहले शिव के रूप पर आराधित थी। इसका विरोध भी किसी ने नहीं किया। इसकी कथा रामानुजाचार्य से जुडती है। उन्होंने ही भगवान के हाथों में शंख और चक्र रखे थे। इस संबन्ध में कहा जाता है कि उन्होंने शंख और चक्र मंदिर में भगवान के सामने रखे और मंदिर को बंद किया। दूसरे दिन वे शंख और चक्र भगवान के हाथ में विभूषित हो गये। इसीलिए ये विष्णुमूर्ति ही हैं। लेकिन इस कथा में सत्य का अंश बहुत कम दिखाई देता है। क्योंकि शंख और चक्र पत्थर में जडे नहीं हैं। वे सोने के बने हैं और मूर्ति में रखे गये हैं। सिर पर केशों की जटाओं के रूप में होना और शरीर पर नागों के चिह्नों का अंकित रहना तथा अन्य कुछ विशेष वास्तविकताएँ शिव के साथ ही जुडती हैं। कुछ पुजारी वर्ग कहता है कि वे शैव हैं, चाहे त्रिपुंड्र नामम् धारण कर रहे हो। शायद स्वामी की देवी नहीं है। स्वामी ब्रह्मचारी थे। ये सुब्रह्मण्य स्वामी ही हो सकते हैं।'

तेलुगु के दो युगल कवि थे। उनमें एक का नाम चेल्लपिल्ल वेंकट शास्त्री हैं। सन् 1936 के आस-पास उन्होंने, (जब वे भगवान के दर्शनार्थ वेंकटाद्रि गये थे), कुछ पद्य भगवान की सेवा में अर्पित किये। उनमें भावनाओं की अभिव्यक्ति देते हुए उन्होंने कहा है- ''कुछ लोग कहते हैं कि रामानुजाचार्य ने आपको इस रूप में आविष्कृत किया है और 'हरि' कहा है जब कि यह स्थल ''शैवस्थल'' के रूप में विकास पाया था। शिव स्वरूप के पुराने चिह्न आज भी मौजूद हैं।''

दिनांक 9-12-1968 का समाचार पत्र 'द इंडियन एक्सप्रेस' के 'रीडर्स व्यूस' में अपनी बात कहने के लिए दिनांक 5-12-68 प्रचुरित एक शीर्षक के अंतर्गत किसी ने स्पष्ट किया है कि ''श्री वेंकटेश्वर का मंदिर पहले

एक जैन मंदिर था। बाद में वह शैव मंदिर बनाया गया। अंत में वह वैष्णव मंदिर में रूपाइत हुआ। वह भी रामानुजाचार्य की तिरुपति यात्रा के पश्चात्। श्री आदिशंकराचार्य ने अपनी यात्रा में 'श्रीचक्र' की प्रतिष्ठा की है।

यह विश्वजनीन विश्वास है कि श्री आदिशंकराचार्य ने श्री वेंकटेश्वर स्वामी के पादपीठ पर 'श्रीचक्र' की स्थापना (रचना) की है। इससे मंदिर की उन्नति और आमदनी में बढौत्तरी की भावना निहित थी। आज हम मंदिर की आर्थिक उन्नति में इस बात की सच्चाई देख ही रहे हैं। पिछली दो दशाब्दियों में अभूतपूर्व प्रगति और उन्नति है। करोड़ों की आमदनी के पीछे ''धनाकर्षण यंत्र'' की महिमा देखी जा सकती है। इसका श्रेय श्री शंकराचार्य जी को ही जाना (मिलना) चाहिए। उन्होंने जब यह कार्य किया था, उस समय यह शैव मंदिर ही हो सकता है, होने की ही संभावनाएँ अधिक हैं। उस समय वेंकटेश्वर को शिव के रूप में ही शायद मानते होंगे।

सूक्ष्म और समुन्नत रूप में बनाया गया, आकर्षक, सुंदर और भव्य श्री वेंकटेश्वर की मूलविराट मूर्ति (मूल बेरम्) स्वयंभू मूर्ति (स्वयं व्यक्त) मानी जाती है। विश्वास है कि किसी शिल्पी ने इसे बनाया नहीं। मानव मात्र में इतनी शक्ति का होना, इतनी कला को आविर्भूत करने की क्षमता का होना असंभव माना जाता है। श्री वेंकटेश्वर तो अर्चामूर्ति हैं। वे भक्ति, कीर्तन, सेवा आदि भक्ति मार्गों से ही प्राप्त किये जा सकते हैं। ब्रह्म, मुनि, ऋषि, भक्तों आदि के अनुनय - विनय से ही विष्णु भगवान इस प्रकार का अर्चारूप ग्रहण कर यहाँ रह गये। अर्चारूप में ही वे सब के लिए सुलभ प्राप्य रहेंगे। प्राचीन युगों में लोग धर्मवान, चरित्रवान और शीलावान होते थे। उनका नैतिक वर्तन और भगवान में विश्वास अधिक मान्य रूप में थे। वे भगवान में अनुरक्त और उनको समर्पित थे। पूजा, जप, ध्यान, तप, योग आदि के माध्यम से भगवान को जानने के मार्ग पर चलते थे। हृदय की उच्यतर संवेदनाओं से ओत-प्रोत थे। भगवान को हृदय में रखकर ध्यान रत होते थे। भगवान का विभव (संपत रूप, ज्ञान की संपन्नता, बौद्धिक संपत्ति, बौद्धिक प्रयास आदि से युक्त रूप) को, व्यूह रूप (अवधारणात्मक और संकल्पनात्मक रूप) को, पर रूप (निरपेक्ष, निर्गुण, दैवी) को समझने के प्रयत्नों में लीन रहते थे। लेकिन कलियुग के मानव इस दिशा में असमर्थ और ऐसे मार्गों में बढने में असमग्र हो गये हैं। नैतिक दृष्टि से भी बलहीन और पाप प्रवृत्ति से चालित रह गये हैं। पापी जीवन के प्रति आकर्षित होनेवाले हो गये हैं। ऐसे लोगों की आत्माओं को सुनिश्चित दिशा में ले जाने और परिष्कृत मार्गों में चलाने के लिए दैवी अनुकंपा की आवश्यकता है। भगवत्कृपा के बिना वे भक्त बन ही नहीं सकते। मुक्ति पथ की ओर जा नहीं सकते। इसीलिए ब्रह्म आदि ने भगवान श्री वेंकटेश्वर से वेंकटाद्रि पर विलसने की प्रार्थना की। मानव भक्तों की रक्षा और उद्धार की भावना उस प्रार्थना में निहित थी। दूसरी ओर कलियुग के सामान्य मानवों की इच्छाओं को पूरना भी है।

श्री वेंकटेश्वर के पांच रूप और उनके परिवार देवता

श्री वेंकटेश्वर भगवान अपने आनंदनिलय में अकेले नहीं हैं। राजा तोंडमान ने भगवान के आदेश से और उनकी इच्छा के अनुरूप अनेक अन्य भागों का निर्माण भी मंदिर के आवरण में किया है। यह सब ब्रह्म, देवता समूह, मुनियों और ऋषियों की प्रार्थना के अनुरूप भगवान के वेंकटाद्रि पर वास के निर्णय के बाद हुआ है। राजा तोंडमान (पृ.सं. 80) ने मंदिर के प्रांगण में अनेक कमरों, शालाएँ, छप्पर, अश्वशालाएँ, गज शालाएँ आदि का निर्माण करवाया था। ब्रह्म ने विश्व की उन्नति और विकास के लिए दो अखण्ड दीपों को भी प्रज्वलित किया और परमात्मा की प्रार्थना की। ये अखण्ड ज्योतियाँ कलियुगांत तक जलती ही रहेंगी।

श्री वेंकटेश्वर ने ब्रह्म को आश्वासन दिया कि उनका यह अवतार कलियुगांत तक रहेगा। ऐसे समय तक रहेगा, जब अखण्ड ज्योतियाँ बुझेंगी और विमान ढहेगा। ब्रह्म ने भगवान के लिए उत्सवों का आरंभ ध्वजारोहण पर्व के साथ किया। ये उत्सव, रथ-यात्रा के साथ समाप्त हुए। उत्सवों के समय दिन में तीन बार नैवेद्य समर्पण और उत्सव यात्राएँ भी संपन्न हुई। भक्तजनों ने संपूर्ण भक्ति से इन उत्सवों में भाग लिया। ब्रह्म ने तोंडमान को बुलाकर आदेश भी दिया कि रमापति के उत्सवों के लिए आवश्यक रथों और अन्य व्यवस्थाओं का नियोजन किया जाय। विश्वकर्मा ने अद्‌भुत रथ का निर्माण किया। अन्य आवश्यक साधनों-छाते, पंखे, चामर आदि की योजना की।

भगवान श्रीनिवास ने ब्रह्म और तोंडमान को आदेश दिया कि वे समस्त देवता समूह, राजाओं और भक्तजनों को उस भव्य उत्सव में आमंत्रित करें। ब्रह्म ने उत्सव का आरंभ किया। 'अंकुरार्पण' से उत्सव आरंभ हुए। अंकुरार्पण के दूसरे दिन पर ध्वजारोहण संपन्न किया गया। कन्या मास (सितम्बर-अक्तूबर) में वैखानस आगम विधि के अनुसार प्रक्रिया चली। मणियों और मोतियों की लडियों

जुलाई 2024

10-12	श्रीनिवासमंगापुरम् श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का साक्षात्कार वैभवोत्सव
16	तिरुमल आणिवर आस्थान
16-18	तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का ज्येष्ठाभिषेक
16-18	तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का पवित्रोत्सव
21	गुरुपूर्णिमा, व्यासपूर्णिमा

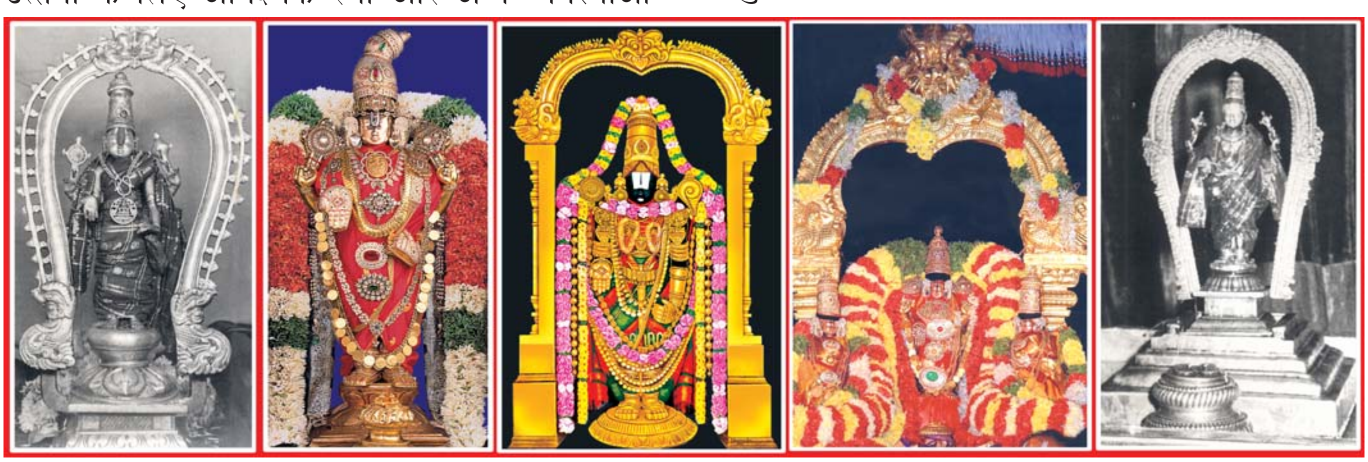

से विभूषित पालकी में भगवान से चढने के लिए प्रार्थना की गयी। तिरुवीथियों में शोभायात्रा चली। मार्ग में भगवान ने ब्रह्म से मजाक करते हुए कहा कि क्या तुम वेद मंत्र भूल गये हो। संकेत पाकर, ब्रह्म वेद मंत्र पाठ करने लगे। उसी संदर्भ में चार वेदों के अनुरूप चार रूपों में भगवान वेंकटेश्वर की परिकल्पना हुई। वे हैं उत्सव श्रीनिवास (चलमूर्ति), उग्र श्रीनिवास, सर्वाधिक श्रीनिवास (भोगमूर्ति) और लेखक श्रीनिवास। लेखक श्रीनिवास हर दिन लेखा-देखते हैं और अन्य आवश्यक कार्यों का निर्धारण भी करते हैं। इसीलिए इन्हें ''कोलुवु-मूर्ति'' भी कहा गया है। ये निर्धारित भी करते हैं कि कौन किस प्रकार का काम करेंगे। (भविष्योत्तर पुराण, अ. 14, श्लो. 24-33).

चार मूर्तियों की योजना के उपरांत ब्रह्म ने ही उनकी प्रतिष्ठा भी की। पाँचवी मूर्ति मूल-विराट-मूर्ति है। इस प्रकार की योजना के साथ ब्रह्म ने उत्सव प्रक्रिया को कार्य रूप दिया। उत्सव श्रीनिवास मूर्ति के रूप में भगवान के स्वरूप परिकल्पना के साथ ब्रह्म ने अनेक वाहनों का निर्धारण किया। विविध प्रकार के नैवेद्यों का निर्देश किया।

ध्वजारोहण दिन से एक दिन पहले विष्णु के सेनानी विष्वक्सेन अन्य देवताओं सहित गाँव की सीमा में पहुँचते हैं। वहाँ मंत्रों के बीच मृत्तिका (मिट्टी) का चयन करते हैं। उसे एक हाथी पर रखकर शोभायात्रा में मंदिर में ले आते हैं। उस मृत्तिका से अंकुरार्पण का कार्य निर्वाह करते हैं। लायी गयी मिट्टी में नवधान्य का रोपण होता है। अंकुरार्पण के बाद के दिन से अवभृथोत्सव दिन और पुष्पयाग दिन पर्यन्त ब्रह्म ने भगवान के उत्सव मनाये। (आजकल अंकुरार्पण के बाद ध्वजारोहण शाम को होता है जबकि पुराणों में सुबह संपन्न होने की बात है।)

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, देव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remunera-tion) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति – 517 507. चित्तूर जिला।

दि.17-04-2024 से दि.25-04-2024 तक
ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामीजी का
ब्रह्मोत्सव अत्यंत धूम-धाम से संपन्न किया है।

तिरुमल क्षेत्र में हनुमान जी का विविध रूप

हनुमज्जयंति के अवसर पर, तिरुमल में विराजित विविध हनुमानजी के रूपों का विवरण सप्तगिरि पाठकों के लिए दी जा रही है।

आज्ञापालक हनुमान (रामर मेडा)

देखिए कितनी विनम्र मुद्रा में हनुमान जी खडे हैं - तनिक झुककर मुँह पर हाथ धरकर। श्रीराम जी की आज्ञा को सुनते हुए 'जी जी' कहने के समय कहीं अपने ही मुँह से लार की बूँदे स्वामी पर गिर जायें तो बहुत बडा अपराध होगा न? इसी कारण अपने मुँह पर हाथ धरकर, कितनी ही विनम्रता से खडे हैं हमारे हनुमान! श्रीरामनवमी, राजतिलक जैसे उत्सवों में प्रधानतया हनुमान तो रहते ही हैं।

बेडी हनुमान

इधर, तिरुपति से आनेवाले भक्तों और उधर श्री वेंकटेश्वर के बीच सेतु की तरह सबसे पहले दर्शन देनेवाले स्वामी हैं - श्रीराम भक्तों में अग्रेसर श्री बेडी हनुमान जी! तिरुमलेश की सन्निधि वीथी में श्री वेंकटेश्वर के अभिमुख होते हुए, मुकुलित हस्तों तथा पावों में बेडियों से खडे हैं ये स्वामी! कहते हैं कि अंजनाद्रि की गिरियों पर अल्हड पन से विचरते पुत्र को (हनुमान) अंजनादेवी ने इस तरह बेडियाँ डालकर खडी कर दी! इसीलिए इन्हें 'बेडी आंजनेय' (हनुमान) कहते हैं। हर दिन तीनों पहर श्री वेंकटेश्वर जी के भोग के बाद, भक्त शिखामणि श्री बेडी हनुमान जी को भी भोग चढ़ाया जाता है जो तिरुमलेश के मंदिर से ही भेजा जाता है। हर रविवार हनुमान जी के पंचामृताभिषेक एवं पूजा, निवेदन भी होते हैं। हर साल ब्रह्मोत्सवों में, गरुडोत्सव के दिन आंध्रप्रदेश सरकार के अधिकारी, इसी मंदिर से शोभायात्रा पर निकलकर श्री वेंकटेश्वर जी को रेशमी वस्त्रों को समर्पित करते हैं।

श्री कोनेटिगट्टु आंजनेयस्वामी(हनुमान)

तिरुमल में स्वामी के पुष्कर के उत्तर-पूर्व कोने पर यानी श्री वराह स्वामी के मंदिर के सामने श्री कोनेटिगट्टु आंजनेयस्वामी (हनुमान) का मंदिर है। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी को यह नाम कोनेटि के तट पर यानी पुष्करिणी के तट पर होने के कारण ऐसा नाम मिला। इस मंदिर में भगवान पश्चिमाभिमुखी, नमस्कार मुद्रा में दिखाई देते हैं। स्थल पुराण से पता चलता है कि श्री आंजनेय स्वामी(हनुमान) को १६वीं शताब्दी में श्री व्यासरायलु जी के द्वारा स्थापित किया गया था।

तलयेरुगुंडु

अलिपिरि से तिरुमल तक पैदल मार्ग पर, पादाल मंडप से गुजरने के बाद, दर्शन देनेवाली एक बडा पत्थर जैसा दर्शन होता है जिसे तलयेरुगुंडु कहा जाता है।

इस पत्थर पर, भगवान आंजनेय(हनुमान) स्वामी नमस्कार भंगिमा में दर्शन देते हैं, नीचे के पत्थर पर घुटनों के सिर को छूने से बने गड्ढे हैं जो भक्त पैदल मार्ग पर पहाड़ी से ऊपर जाते हैं और नीचे आते हैं भगवान के दर्शन करने के बाद, इस आंजनेय(हनुमान) स्वामी को प्रणाम करें और अपने सिर और घुटनों को इस छेद पर रखें, इसलिए चलने से पैरों में दर्द होता है, भक्तों का मानना है कि ऐसा कोई दर्द या पीडा नहीं होता है।

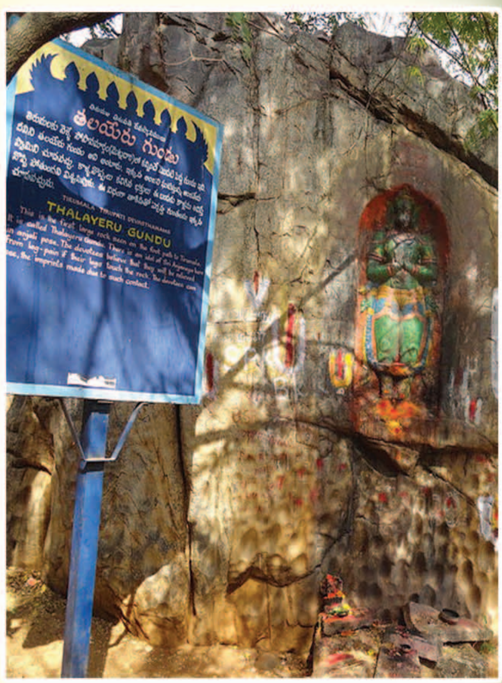

इस प्रकार तिरुमल दिव्य क्षेत्र में विराजित होकर, भक्तों से पूजाएँ स्वीकार कर, आशीष देते हुए श्री हनुमान जी का दिव्य वैभव अत्यद्भुत है।

तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का
पुष्पयाग महोत्सव
दि.14-06-2024

मिथ की महिला चरित

सीता-एक आदर्श व्यक्तित्व

- डॉ.के.एम.भवानी

ऐसा कोई भारतीय नहीं होगा, जो माता सीता का नाम न जानता हो। भारतीयों के ओंठो पर सदा चलनेवाला नाम है सीता। सीताराम, जानकी राम, सीतापति आदि नामों से ही लोग भगवान श्रीराम को भी पुकारना पसंद करते हैं। वैसे ही सारे भारतीय माता सीता को जानकी, मैथिली, रामसीता, वैदेही आदि नामों से याद करते रहते हैं।

अयोनिजा :

मिथिला राज्य के राजा जनक एक बार जब यज्ञ करने हेतु यज्ञ वाटिका के लिए भूमि को जोतता है, तब भूमि के अंदर उसे एक पेटी मिल जाती है। उसे खोलकर देखने पर उसमें सुंदर शिशु दिखाई देती है। जनक ने उसे सीता के नाम से पालन-पोषण किया। जनक की पुत्री होने के कारण वह शिशु जानकी कहलाई गई।

विवाह :

अयोनिजा, समस्त सद्गुण विद्यमान अपनी पुत्री की शादी के लिए राजा जनक ने यह शर्त रखी कि उसके यहाँ पीढियों से आनेवाला शिव धनुष को उठानेवाले महान वीर से सीता की शादी होगी। अयोध्या के राज कुमार श्रीराम शिव धनुष को उठाना ही नहीं, बल्कि उसे तोड़ भी दिया और सीता से शादी की।

पत्नी धर्म का पालन :

जब पिता की आज्ञा का पालन करने श्रीराम चौदह साल वनवास करने के लिए जाने को तैयार होता है, तब सीता अपने को भी साथ ले जाने का हठ करती है। तो राम उसे राज महल में ही रहने को राजी कराने की बहुत-बहुत कोशिश करने लगता है, तो सीता पति श्रीराम से इस तरह कहती है - ''हे श्रीराम! आप मुझे जंगल के कष्टों के बारे में बताकर क्यों डराने की कोशिश कर रहे हैं? आप मेरे साथ रहते हैं, तो जंगली जानवर से मुझे डर क्यों? आपके बिना राजमहल में मैं एक पल भी सुख से नहीं रह सकती हूँ।'' तब भी राम सीता को ले जाने को राजी नहीं होता है, तो सीता यह कहने में संकोच नहीं करती है कि ''मैं इतना कहने के बाद भी आप मुझे जंगल ले जाने के लिए मना करेंगे, तो मैं यहीं समझूँगी कि मेरे पति मुझे जंगल में रक्षा नहीं कर सकता है। मेरे पिता राजा जनक ने मुझे पुरुष वेश में रहे स्त्री से शादी करवाई।'' पति के बिना जिंदा नहीं रह सकने की पतिव्रता पत्नी की मनोवेदना सीता की बातों में झलकती है। श्रीराम के साथ वन जाने केलिए निश्चित

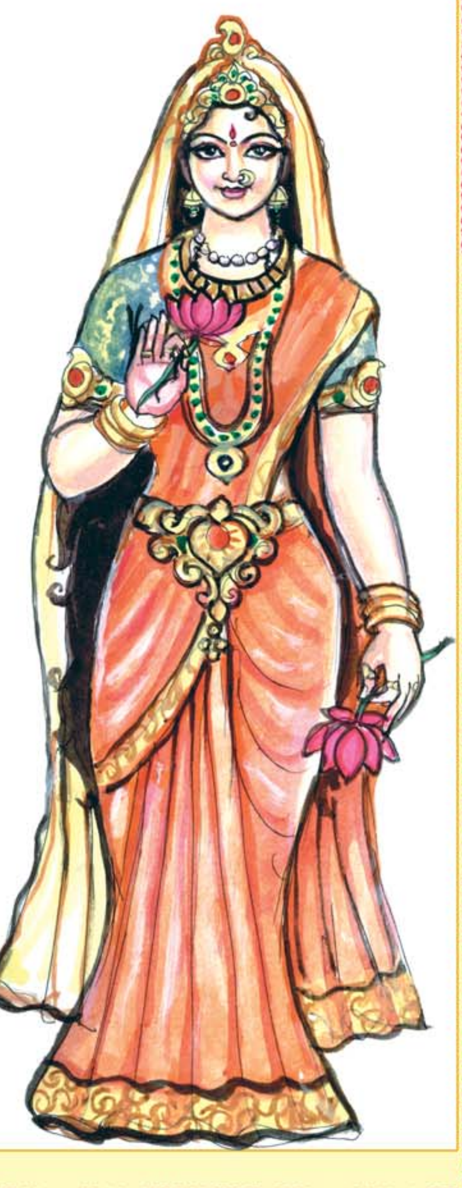

सीता यह भी कहती है कि अगर राम उसे वनवास को नहीं ले जाता है, तो वह अग्नि या जल में कूदकर, विष खाकर मरना स्वीकार करती है। मगर पति श्रीराम के बिना जिंदा नहीं रह सकती है। इस प्रकार कई तरह से सीता राम को मनाने की कोशिश करती है और अंत में सफल हो जाती है।

श्रीराम को उपदेश :

वनवास के समय जब श्रीराम दंडकारण्य में ऋषि-मुनियों को क्रूर राक्षसों का संहार करने का वचन देता है, तब सीता उससे कहती है कि- ''हे श्रीराम! संसार में लोग तीन व्यसनों के आदी हो जाते हैं। एक असत्य कहना। दूसरा अन्य स्त्री पर चाह। तीसरा अकारण दूसरों की हिंसा करना। आप में पहले दो व्यसन बिल्कुल नहीं है। आप में सत्य और धर्म जैसे समस्त सद्गुण विद्यमान हैं, लेकिन अब मुझे लग रहा है कि आपमें तीसरा व्यसन जन्म लिया है इसीलिए आप उन सारे राक्षसों को मारने की प्रतिज्ञा किए हैं, जो हमारे शत्रु नहीं है। आप अकारण उन्हें शत्रु समझकर मारने को तैयार होना मुझे पसंद नहीं है। रामा! मुझे मालूम है कि स्वधर्म का पालन करनेवाला क्षत्रियों को शरणागतों की रक्षा करने के लिए धनुष-बाण आवश्यक है, लेकिन आप अब क्षत्रिय धर्म में नहीं है। वन में वल्कल पहनकर जिंदगी बिता रहे हैं। इसलिए आप जब तक वनवास में रहेंगे, तब तक क्षत्रिय धर्म को छोड़कर तापस जैसा रहने से मुझे खुशी होगी क्योंकि हथियार पकड़ने से मनोविकार जागृत होता है। इसलिए आप अयोध्या वापस जाने तक धनुष-बाण छोड़ दीजिए।'' फिर सीता यह भी कहती है कि ''हे श्रीराम! स्त्री सहज चंचलता से मैंने यह सब आपसे कहा। आपको धर्मोपदेश करना मेरी इच्छा नहीं है। मुझ में इतना सामर्थ्य भी नहीं है। आप जिसे धर्म समझते हैं, उसीको कीजिए।''

दूरदृष्टि और समय स्फूर्ति :

जब राक्षस राज रावण सीता को अपहरण करके आकाश मार्ग में रथ पर बिठाकर उसे लंका ले जाने लगता है, तब सीता खुद को बचाने की कोशिश में मदद के लिए चारों ओर देखती रहती है। जब उसे दूर में पर्वत पर वानरों का समूह दिखाई देता है, तब तुरंत सीता अपने कुछ गहनों को साड़ी के आँचल में बाँधकर पर्वत पर पड़ने की तरह नीचे गिरा देती है। यह उसकी दूरदृष्टि का ज्वलंत उदाहरण है क्योंकि उसे मालूम है कि श्रीराम और लक्ष्मण जरूर उसे ढूँढते हुए आएँगें, तो ये गहनें उन्हें सीता का पता बताने में मददगार साबित होंगे।

सतीत्व का पालन :

जब रावण सीता का अपहरण करके लंका के अशोक वाटिका में उसे रखता है, तब वह बार-बार सीता पर मोहपूर्ण बातें करते हुए उसे कामदृष्टि से देखता है, तब सीता को मजबूर हालत में रावण को जवाब देने की नौबत आती है। पतिव्रता नारी पर पुरुष से बातें करना धर्म विरुद्ध मानने के कारण सीता ऐसी स्थिति में उसके सामने एक तिनके को रखकर बातें करती है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह काम मोहित राक्षस रावण से नहीं, एक तिनके से बातें कर रही है।

रावण से बातें करते समय सीता उससे यह कहती है कि पति की आज्ञा के बिना वह कुछ नहीं करती है। वरना वह अपनी सतीत्व से रावण को भस्म कर सकती है।

मर्यादा का पालन :

जब हनुमान लंका के अशोक वाटिका में सीता को देखता है, तब वह सीता माता के दुःख को देख नहीं पाता है। इसलिए वह उसी समय सीता को अपने भुजाओं पर बिठाकर लंका से ले जाने की बात कहता है, तब सीता माता उससे कहती है कि यह उसके लिए गौरव की बात नहीं है। श्रीराम खुद आकर रावण को हराकर सीता को ले जाना ही उचित है। मर्यादा है। पति की मर्यादा को बनाए रखना पत्नी का धर्म है।

अत्यंत दयालु :

श्रीराम के दूत बनकर लंका में आया हनुमान सीता माता को देखने के बाद राक्षसों का बल जानने के लिए उनसे युद्ध करने लगता है और जान बूझकर उनकी पकड़ में भी जाता है। तब रावण हनुमान की पूँछ को जलाने की आज्ञा देता है। जब सीता को यह बात मालूम होता है, तब माता अग्निदेव से हनुमान को रक्षा करने की प्रार्थना करती है।

श्रीराम रावण संहार करने के बाद हनुमान से सीता को अपने विजय का संदेश भेजता है। तब हनुमान सीता से तब तक अशोक वाटिका में सीता को सताया राक्षस स्त्रियों को मारने की अपनी इच्छा प्रकट करता है तो सीता कहती है कि राक्षस स्त्रियाँ उसको सताना उनका राज धर्म है। अपने राजा की आज्ञा का पालन करना उनकी जिम्मेदारी है। इसमें उनका कोई दोष नहीं है। इसलिए उनको मारना उचित नहीं है। यह माता सीता की अपार करुणा है।

स्वाभिमानी के रूप में :

लोक विमर्श से बचने के लिए जब राम गर्भवती सीता को त्याग देता है, तब सीता बहुत व्यथित होती है। ऋषि वाल्मीकि की आश्रम में रहती हुई लव और कुश को जन्म देती है। जब वे बड़े हो जाते हैं, तब सीता उन्हें श्रीराम को सौंपती है और

अपने निज स्थान पृथ्वी में चली जाती है। राज परिवार और अयोध्या प्रजा प्रार्थना करने पर भी वह फिर अयोध्या में आकर महारानी के रूप में राज मंदिर में रहने को तैयार नहीं होती है। यह उनके स्वाभिमान का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

क्षत्रिय राज मर्यादाओं का पालन, पतिव्रता धर्म का पालन करते हुए भी सीता माता हमेशा अपने स्वाभिमान को बनाए रखी।

आदर्श दंपति :

पुराणों के अनुसार सीताराम जैसे आदर्श दंपति सृष्टि में ही अन्य कोई नहीं है। इसीलिए युगों के बाद भी आज भी भारत देश में शादी की निमंत्रण पत्रिका में सीताराम के चित्र और उनसे संबंधित श्लोक छापना विवाह के लिए शुभ माना जाता है।

जानक्याः कमलामलांजली पुटे याः पद्मरागाइताः
न्यस्ता राघव मस्तकेच विलसत कुंद प्रसूनाइताः
स्रस्ता श्यामल कायकांति कलिताः या इंद्रनीलाइताः
मुक्तास्ताः शुभदा भवंतु भवतां श्रीराम वैवाहिकाः।।

लोक समस्त सुखिनो भवंतु।

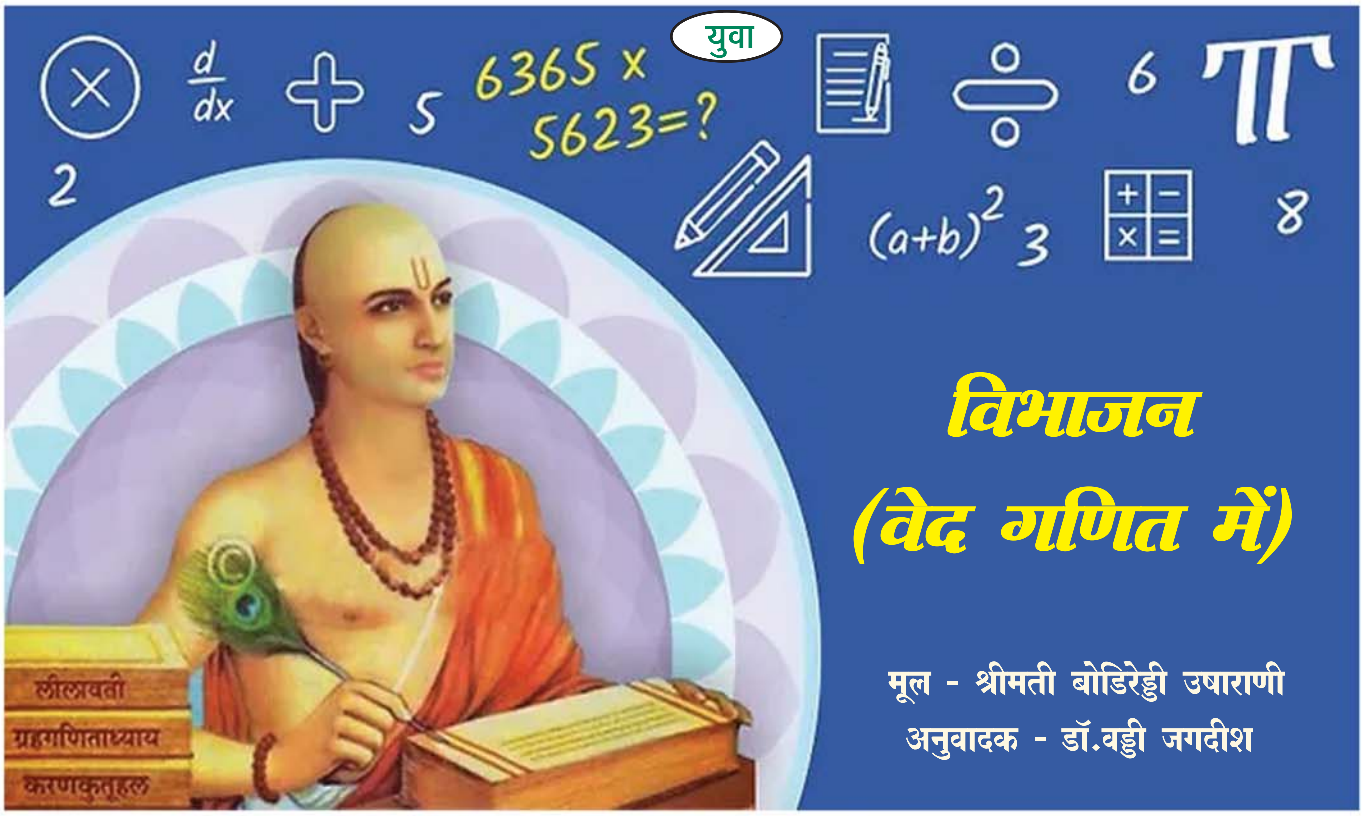

विभाजन (वेद गणित में)

मूल - श्रीमती बोडिरेड्डी उषाराणी
अनुवादक - डॉ.वड्डी जगदीश

मौखिक विभाजन पद्धतियाँ : इन पद्धतियों को अद्ययन तथा अभ्यास करने से बिना विभाजन कर विभक्त और शेष को पहचान कर सकते है। विभाजन की जाने वाली संख्या को 'भाजक' कहते है। किसी संख्या को विभाजित करना विभाजन कहलाते है। विभाजन के परिणाम को 'भागफल' और 'शेष' कहा जाता है।

विभाज्य = विभाजक × भाग फल + शेष

विधियाँ : 1. दो अंकों वाली संख्या को '9' से विभाजन करने पर उसके भागफल और शेष को पहचानना :

दो अंकों वाली संख्याओं में दशम स्थान की संख्या भागफल होता है साथ ही अंकों का कुल शेष बनता है।

उदा (1) : 13 को 9 से विभाजन करने के लिए....

इस में विभक्त यानि भागफल दशम स्थान की संख्या 1 होता है। शेष के लिए अंकों का कुल होता है। 1+3=4.

उदा (2) : 52 को 9 से विभाजन करने के लिए भागफल दशम स्थान की संख्या 5 होता है।

शेष होता है कि (अंको का कुल) 5+2=7 होता है।

उदा (3) : 27 को 9 से विभाजन करने के लिए...

दशम स्थान की भागफल संख्या = 2.

शेष अंकों का कुल - 2+7=9 होता है।

शेष का पुनः भागफल 1 है।

इसलिए विभक्त 3 होता है। शेष '0' होता है।

उदा (4) : 83 को 9 से विभाजित करने के लिए :

विभक्त भागफल का दशम स्थान की संख्या : 8.

कुल : 8+3=11 होता है।

पुनः भागफल 1 और शेष 1 होता है।

इसलिए कुल भागफल : 8+1=9, शेष =1 होता है।

विधि (2) : तीन अंकोवाली संख्या को '9' से विभाजन करते समय :

प्रथम विधि : तीन अंकोंवाली संख्या को '9' से जब विभाजन करते है तब उसका भागफल के लिए बाऐ ओर से दो अंकों को 1 मिलाना चाहिए।

उदा (1) : 103 को '9' से विभाजन करने के लिए....

बाए ओर दो अंक 1 और 0 है इनको 1 मिलाना चाहिए।

तब भागफल के लिए पहले दो अंकों का कुल = 10+1=11 होता है।

शेष अंकों का कुल - 1+0+3=4 बनता है।

उदा (2) : 114 को '9' से विभाजन करने के लिए....

भागफल = 11+1=12

शेष (अंकों का कुल) = 1+1+4=6 बनता है।

द्वितीय विधि : 212 को '9' से विभाजन करने के लिए...

उदा (1) : पहले दो अंकों को बाए तरफ से संख्या को 2 मिलाना चाहिए।

तब भागफल : 21+2=23

शेष : (अंकों का कुल) 2+1+2=5 होगा।

उदा (2) : 225 को '9' से विभाजन करने के लिए....

22 को 2 मिलाना है।

भागफल : 22+2=24

शेष : 2+2+5=9 बनता है। लेकिन पुनः शेष 1 है। इसलिए कुल भाग फल 24+1=25 होता है। यहाँ शेष '0' बनता है।

विधि (3) : 4 अंकों वाली संख्या को '9' से विभाजन करते समय :

विधान : 4 अंकों वाली संख्या को '9' से जब विभाजन करते है। तब भागफल के लिए पहली संख्या को दूसरी संख्या से, पहली दो संख्याओं का कुल को तीसरी संख्या के नीचे लिखकर जोड़ना चाहिए। यहीं भागफल होता है। साथ ही अंकों का कुल से शेष मिलता हैं।

उदा (1) : 1203 को '9' से विभाजन करने के लिए.... 1 को 2 के नीचे लिखकर, 1, 2 का कुल को '0' के नीचे लिखकर उसे मिलाना 1 तब भागफल मिलता है और अंकों का कुल शेष होता है।

जैसे भागफल : 120+13=133.

शेष : 1+2+0+3=6.

उदा (2) : 1507 को '9' से विभाजन करने के लिए...

1 को 5 के नीचे और 1, 5 दोनों का कुल 6 के नीचे लिखकर मिलाना से भागफल आता है। अंकों का कुल शेष होता है।

भागफल =150+16=166.

शेष =1+5+0+7=13.

शेष का पुनः विभक्त 1 तब शेष 4 बन जाता है।

इसलिए कुल विभक्त = 166+1

= 167

शेष = 4.

इस प्रकार वेद गणित में विभाजन आसानी से कर सकते हैं।

अन्तरंग में षड्रिपु

- श्रीमती वी.केदारम्मा

काम, क्रोध, मद, लोभ की जब लग घट में खान।
कहाँ मूर्ख, कहाँ पंडित दोनों एक समान।।

चाहे कितना ही पण्डित क्यों न हो, यदि उसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य रहे तो वह परम मूर्ख के समान देखा जायेगा; ऐसा महात्मा कबीर ने कहा। मनुष्य में विद्यमान ये षड्गुण ही अरिषड्वर्ग हैं। ये अंतरंग में रहने वाले रिपु (शत्रु) हैं। इनके वश में होकर कई लोग अपना स्थान खोकर अपमान के भागीदार हुए। अंत में प्राण भी खो दिये। कुछ और लोग वंश-नाश के कारण बन गये। इन छहों के कारण अप्रतिष्ठा पाने वालों की कई कथाएँ पुराणेतिहासों में देखने को मिलती हैं।

महाभारत को ही लीजिए; काम के कारण आँखें रहने पर भी अन्धा होने वाला कीचक द्रौपदी को चाहकर भीम के हाथों मर गया। काम का मतलब केवल शारीरिक वाँछा (कामवासना) है; ऐसा देखना नहीं चाहिए। मानसिक वाँछाएँ भी काम (कामवासना) ही हैं। ''किसी भी तरह अनुभव करना है''; ऐसी वाँछा मनुष्य को दहन करता है। वैसी हालत में चाहे कोई

भी कुछ भला कहे तो मन पर असर नहीं पडता। उस समय चाहे कितना ही विद्वांस क्यों न हो नीति-नियम त्यजकर व्यवहार करता है। मूल्यवान कामनाएँ चाहकर धर्म-बद्ध रीति से हासिल करना कोई कसूर नहीं है; ऐसा आध्यात्मिक ग्रंथ बताते हैं।

श्रीमद्भागवत में, हिरण्यकशिप अपने पुत्र प्रह्लाद के मुख श्रीमन्नारायण का नाम सुनते ही आग-बबूला होता था। क्रोध में आकर बिना करुणा दिखा कर अपने पुत्र प्रह्लाद को हाथियों से कुचलवाया; शूलों से भोंकवा दिया; आग में बिठाया; अनेकों तरह सताया। अंत में नरसिंह स्वामी के हाथों मर गया। क्रोध कितना खतरनाक है; हमें इससे ज्ञात होता है। राम पर शूर्पणखा मोहित होने से अंत में लंका को हानि पहुँची। दुर्योधन का मद, कौरवों के अंत का कारण बना। मदमत्त व्यक्ति दूसरों का बडप्पन नहीं पहचानता। अहंकार और गर्व के मारे मानव संबंधों का निर्वहण ज्यादा दिनों तक स्थापित नहीं कर सकता। इसका बडा उदाहरण दुर्योधन ही है। असूया, ईर्ष्या-द्वेषों से भरा शिशुपाल सुदर्शन चक्र से निहत हुआ। एक तरह से यह मात्सर्य का अन्य उदाहरण है।

इस तरह हम बचपन से अरिषड्वर्गों से घटित होने वाली हानि से संबंधित कथाएँ सुनते ही आ रहे हैं। इन छः गुणों के द्वारा घटित होनेवाली मानसिक ग्लानि आरोग्य पर तीव्र प्रभाव डालती है; ऐसा आज के मनोवैज्ञानिक भी हमें सचेत कर रहे हैं। इसे भूलना नहीं चाहिए। इसीलिए मानव को बुराई की तरफ खींच लेनेवाले अंतरंग शत्रुओं के वश न होकर जागरूक रहना चाहिए। तब हम प्रत्येक काम पर विजय हासिल कर सकेंगे।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

ओदिय वेदत्ति नुट्पोरुळाय्, अदनुच्चि मिक्क
शोदियै नाथनेन वरियादु उळल्हिन्न तोण्डर्,
पेदैमै तीर्त्त विरामानुजनै त्तोळुम् पेरियोर्
पादमल्लालेन्दन्नारुयिर्क्कु, यादोन्नुम् पत्तिल्लैये ॥८५॥

अधीयमानश्रुतिततिपरमतात्पर्यभूतम् औपनिषदपरज्योतिश्शब्दवाच्यम् अच्युतं नारायणं सर्वशेषितयाऽनवगच्छताम् अत एवान्यत्र चपलानां खलानाम-विवेकमपाकृतवति भगवति रामानुजे प्रवणानां महतां पादारविन्दादन्यन्न मे शरणमात्मनः॥

पठ्यमान वेदों के परम तात्पर्यभूत और उन वेदों के शिरोभूत उपनिषदों से प्रतिपाद्य परंज्योतिस्वरूप (अथवा उपनिषदों में स्पष्टतया प्रतिपाद्य) श्रीमन्नारायण को सर्वशेषि जानने में अशक्त, और अत एव देवतांतरभजन करनेवाले पामरों का अज्ञान मिटानेवाले श्री रामानुज स्वामीजी के भक्तों के सिवाय मेरी दूसरी कोई गति नहीं है। (विवरण-वेद के दो भाग होते हैं कर्मकांड और ब्रह्मकांड (जिसे वेदांत, वेदसिर, उपनिषत् इत्यादि भी कहते हैं)। कर्मकांड में अग्नि, इंद्र, वायु, वरुण इत्यादि देवताओं की पूजा का विधान और ब्रह्मकांड में परब्रह्म का स्वरूप, उपासना इत्यादियों का वर्णन किया गया है। परंतु आचार्यों का सिद्धांत है कि उक्त इंद्रादि देवताओं की पूजा वास्तव में उनके अंतर्यामी भगवान की ही पूजा है, और उपवर्णित परब्रह्मशब्दवाच्य वे भगवान साक्षात् श्रीमन्नारायण हैं। अतः सारे वेद का यह तात्पर्य सिद्ध हुआ कि वे भगवान ही देवमनुष्यादि समस्त चेतनों के शेषी हैं और सबको उन्हीकी सेवा करनी चाहिए। परंतु यह अर्थ समझने में अशक्त मूर्खलोग देवतांतरों की सेवा करने लगे। श्री रामानुज स्वामीजी ने इनकी यह मूर्खता मिटा दी।

> सम्पूर्ण वेद का यह तात्पर्य है की भगवान ही देव मनुष्यादि समस्त चेतनों के शेषी हैं और सबको उन्हीकी सेवा करनी चाहिये।

क्रमशः

(गतांक से)

यह मान्यता है कि हिरण्यकश्यप का संहार करने के बाद नरसिंह स्वामी भयानक अट्टहास करते अति भीषण रूप में गर्जन करते इस प्रदेश में नव प्रदेशों में नव मुद्राओं में प्रतिष्ठित हुए हैं। वे ही आज नव नरसिंह के क्षेत्रों के रूप में प्रचलित हुए हैं। वे नव क्षेत्र इस रूप में हैं- ज्वाला, अहोबिल, मालोल, क्रोड, कारंज, भार्गव, योगानंद, चत्रवट, पावन नरसिंह के रूपों में इस दिव्य क्षेत्र में विराजमान हैं। वे ऊपरी अहोबिल में उग्र नरसिंह के रूप में और निचले अहोबिल में लक्ष्मी समेत शांतमूर्ति के रूप में भक्तों को पुण्य दर्शन दे रहे हैं। यह भी मान्यता है कि नव रसों यथा रौद्र, वीर, करुणा, शांत, भीभत्स, श्रृंगार, अद्भुत, भयानक, संतोष नामक रूपों में स्वामी के दर्शन देना बडे आश्चर्य की बात है। स्थल पुराण के अनुसार इन नव रूपों में स्वामी के दर्शन करने से विविध प्रकार की फलश्रुति प्राप्त होती है। अहोबिल में बसे नव नरसिंह स्वामी और उन के दर्शन करके पूजादि करने से प्राप्त होनेवाली फलश्रुति निम्न है-

1. ज्वाला नरसिंह :

ये ही उग्र नरसिंह के रूप में जाने जाते हैं। अवतार के समय प्रथम प्रकटित रूप हैं। अत्यंत उग्र एवं भयानक रूप है। अत्यंत तेजोमय रूप भी हैं। अपने नुकीले नखों से हिरण्यकश्यप के पेट को छीर कर आंतडियों से वीणा बजाने का उग्र रूप है। ये अत्यंत प्रभावशाली रूप समझा जाता है। इन के दर्शन करना पहले के जन्मों का पुण्य फल समझा जाता है। सर्वाधिक वरदान देनेवाला रूप भी यही है।

नरसिंहावतार और नव नरसिंह क्षेत्र अहोबिल

- प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

2. अहोबल नरसिंह :

हिरण्यकश्यप के संहार के बाद बैठी मुद्रा में रहनेवाला रूप है। भक्तगण इन के भी अत्यंत श्रद्धा के साथ दर्शन करते हैं।

3. मालोल नरसिंह :

इस स्वामी की अलग कहानी है। लक्ष्मी माई अवतार मूर्ति श्री महाविष्णु की तलाश करती हुई धरती पर उतरायी। श्री महाविष्णु को उन्होंने उग्र नरसिंह के रूप में देखा। फिर उन्हें प्राप्त करने के लिए गिरि कन्या चेंचु लक्ष्मी (गिरि पुत्री, आदिवासी) के रूप में पैदा हुई। तब नरसिंह ने चेंचु लक्ष्मी को स्वीकार किया। उन्हें अपनी जांघ पर बिठाया। उसी मुद्रा में मालोल नरसिंह के रूप में यहाँ दर्शन देते हैं। यानी जांघे पर श्री महालक्ष्मी को बिठाकर बैठी हुई मुद्रा में स्वामी दर्शन देते हैं।

4. कारंज नरसिंह :

नरसिंह स्वामी का यह चौथा रूप है। ये पेड के नीचे बैठी हुई ध्यान की मुद्रा में दर्शन देते हैं। योग साधना में लीन स्वामी की यह मुद्रा अत्यंत अद्भुत एवं सुंदर है। इस स्वामी के दर्शन मात्र से अलौकिक आनंद प्राप्त होता है।

5. पावन नरसिंह :

ये नरसिंह स्वामी वरद मूर्ति हैं। एक बार दर्शन करने मात्र से भक्तगण के सारे पापों को दूर करनेवाले दयालु एवं करुणामूर्ति हैं। पाप विनाशनकारी पावन मूर्ति के रूप में ये अत्यंत प्रचलित हैं। भक्तों के सारे पापों को दूर करके सारे शुभों को प्रदान करनेवाले प्रदाता ये नरसिंह स्वामी हैं। इसलिए इन का नाम पावन नरसिंह स्वामी के रूप में प्रचलित हो गया है।

6. योग नरसिंह स्वामी :

इस नरसिंह स्वामी की मुद्रा पलटी मार कर बैठने की मुद्रा है। योगासन में बैठी हुई मुद्रा है। यह मान्यता है कि आज भी देवतागण आकर इस नरसिंह के साथ बैठकर योग साधना करते हैं। इस स्वामी के दर्शन से सारे मानसिक क्लेश दूर हो जाते हैं। मन को शांति प्रदान करनेवाले ये स्वामी अत्यंत सुंदर और सुरुचिर रूप में दर्शन देते हैं।

7. चत्रवट नरसिंह स्वामी :

बहुत बडे पीपल पेड के नीचे बैठी हुई मुद्रा में ये स्वामी दर्शन देते हैं। इस मुद्रा को वीरासन भी कहा जाता है। इस स्वामी के संदर्भ में एक लोक कथा प्रचलित है। हू हू और हा हा नामक दो गंधर्व अपने शापों से मुक्त होने इस स्वामी के सामने नित्य गीत गाते रहते थे। स्वामी भी उनके सुर में सुर मिलाकर अपनी जांघे पर ताल करते दिखाई देते हैं। स्वामी के इसी स्वरूप को चत्रवट नरसिंह स्वामी कहा जाता है। स्वामी की कृपा से गंधर्वों का शाप विमोचन हुआ था।

8. भार्गव नरसिंह स्वामी :

परशुराम की विनति पर स्वामी ने उन्हें दर्शन दिए थे। इसलिए स्वामी का नाम भार्गव नरसिंह स्वामी पडा है। स्वामी का अनुग्रह चाहिए तो इस स्वामी के दर्शन करना आवश्यक है।

9. वराह नरसिंह स्वामी :

यह अद्भुत रूप है। दो अवतार एक ही स्वामी में दिखाई देते हैं। हिरण्याक्ष के द्वारा भूदेवी की चोरी होने पर भूदेवी को फिर से स्थापित करने के लिए श्री महाविष्णु ने वराह अवतार लिया। अपने मूपुर के नुकीले बलिष्ठ दांतों पर धरती को उठाकर फिर से उसे जीवंत किया। साथ ही उसी अवतार के समय भूदेवी के साथ वराहमूर्ति ने परिणय किया। भक्तजनों के उद्धार के लिए सदा शेषाचल पर्वतों को अपना आवास बनाकर आदि वराह स्वामी के रूप में प्रचलित हुए। इस स्वामी के रूप और नरसिंह के रूप में यह मूर्ति विशिष्ट दर्शन देती है। सिंहाचल में बसे वराह नरसिंह स्वामी की तरह यह मूर्ति प्रचलित हुई है। इस कारण से अहोबिल क्षेत्र अत्यंत महत्व का बन पडा है।

इन नव नरसिंहों के दर्शन के उपरांत भक्तगण अहोबिल क्षेत्र के अन्य मुख्य प्रदेशों के दर्शन करते हैं।

अहोबिल क्षेत्र के अन्य मुख्य प्रदेश :

1. प्रह्लाद पडि :

यह प्रह्लाद के द्वारा शिक्षा ग्रहण करनेवाला प्रदेश शिक्षालय है। तेलुगु में 'बडि' का अर्थ पाठशाला है। प्रह्लाद ने अपने शिक्षा गुरु के आश्रम में रहते हुए विद्या सीखी थी। यह वही पाठशाला का प्रदेश है। इस के प्रमाण भी यहाँ प्राप्त होते हैं। यह ऊपर अहोबिल क्षेत्र में है। यहां की शिलाओं पर आज भी अक्षर पाये जाते हैं। यहीं पर उग्र स्तंभ के निकट एक गुफा में प्रह्लाद की मूर्ति के दर्शन भी होते हैं।

2. रक्त कुंड :

हिरण्यकश्यप के संहार के बाद नरसिंह स्वामी ने रक्त से भरे अपने हाथों को इसी कुंड में साफ किया था। इसलिए इस कुंड का जल लाल वर्ण में बदल गए। इसी को रक्त कुंड कहा जाता है। इस पुष्कर के जल आज भी लाल वर्ण में दिखाई देते हैं। किंतु भक्तगण इस जल को अंजली में भरते हैं तो वे साधारण पानी बन जाते हैं। इसे स्वामी की महिमा के रूप में भक्तगण विश्वास करते हैं।

3. उग्र स्तंभ :

नरसिंह स्वामी के प्रकट होनेवाले स्तंभ आज भी यहाँ विद्यमान है। इसी को उग्र स्तंभ (शिला के रूप में) कहा जाता है। स्वामी ने इसी खंभे से निकल कर हिरण्यकश्यप का संहार किया था। यह ऊपर के अहोबिल से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस के दर्शन करके स्पर्श करने से सर्वपाप हरण होता है। इसीलिए सारे भक्त इस के दर्शन करके स्पर्श करते हैं।

अहोबिल क्षेत्र के पास भवनाशी नदी प्रवाहित होती है। इस अहोबिल क्षेत्र के नगरी, निधि, वेदाद्री, तक्ष्याद्री, गरुडाद्री, शिंगवेल कुंड्रम, एगुव तिरुपति, पेद्दा अहोबिल, भार्गव तीर्थ, नव नारसिंह तीर्थ आदि नाम भी प्रचलित हैं। ऊपर के अहोबिल क्षेत्र के मूल विराट को उग्र नरसिंह, निचले अहोबिल नरसिंह और वोबुलेषु नामों से पुकारते हैं।

श्री महाविष्णु के अवतारों में राम, कृष्ण अवतारों के बाद नरसिंह अवतार की पूजा ही अधिक की जाती है। दोनों तेलुगु राज्यों में बडी संख्या में पाये जानेवाले नरसिंह स्वामी के मंदिर ही इस के साक्ष्य प्रमाण हैं।

समाप्त।

श्री प्रपन्नामृतम्

(48वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

यतिराज श्री रामानुजाचार्य द्वारा यादवाद्रि पर श्री सम्पत्कुमार भगवान की प्रतिष्ठा

यतिराज श्री रामानुजाचार्य श्री सम्पत्कुमार भगवान एवं यवन राजकन्या को साथ लेकर जब दिल्ली से यादवाद्रि की तरफ जा रहे थे, तब मार्ग में आपने भगवान से प्रार्थना की कि यह राजकन्या आपको अत्यन्त प्रिय है, इसलिये हमारे भी सम्मान करने योग्य है। किन्तु महलों में पली हुई समस्त सुख सुविधाओं वाली इस कोमलांगी को हम यादवाद्रि पर ले जाकर कहाँ रखेंगे?'' इस प्रार्थना के बाद एक आश्चर्यजनक घटना घटित हुई कि- सहसा राजकन्या भगवान् श्री सम्पत्कुमार के श्रीविग्रह में विलीन हो गयी। इस घटना से सबको बडा आश्चर्य हुआ और सेना के साथ चलता हुआ यवन राजकुमार भी अपनी बहिन को न देखकर दुःख करने लगा। किन्तु यतिराज ने समझाया कि वह भगवान की अनन्यप्रिया थी और इसी अनन्यता के कारण भगवान् में एकाकार हो गयी हैं। इस के बाद सभी लोग श्रीनारायणपुर में पहुँचे और यादवाद्रि पर शास्त्रीय विधिपूर्वक उस मूर्ति का संप्रोक्षण कराके यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने श्री नारायण भगवान की मूलमूर्ति के समीप श्री सम्पत्कुमार भगवान् को प्रतिष्ठित कर दिया।

(गतांक से)

यतिराज ने इस प्रकार भगवत् विग्रह में पुत्रवत्सलता स्थापित कर इनको सभी महोत्सवों का कर्त्ता मानकर भावपूर्वक विविध उत्सव करते हुये सभी लोगों के लिये भगवत् तीर्थ प्रसाद सुलभ बना दिया। इसी अवसर पर आपने भगवान् के विग्रह में विलीन यवन राजकुमारी की मूर्ति बनवाकर भगवान् के चरणारविन्दों में स्थापित कर, सविधि आराधना की व्यवस्था की। अपनी बहिन के अर्चाविग्रह को प्रतिष्ठित देखकर एवं यतिराज से आदेश प्राप्त कर यवन राजकुमार ने दिल्ली के लिये प्रस्थान किया और दिल्ली पहुँचकर समस्त वृत्तान्त अपने पिता को सुनाया। अपनी पुत्री का इस स्थूल शरीर के द्वारा ही परमात्मा से मिलन सुनकर बादशाह को अत्यन्त विस्मय हुआ। तब पण्डितों ने बताया कि - ''भगवान् में अनन्य प्रेम होने के कारण ऐसा हुआ है। आपकी पुत्री परमधन्य है जो सशरीर भगवान में लीन हो गई।''

यह सुनते ही दिल्लीश्वर ने अपने ऊपर भगवान एवं यतिराज की पूर्ण कृपा समझकर अपने जमाता भगवान् श्री सम्पत्कुमार की सेवा में बहुत-सा धन और अनेकों गाँवों की जागीर प्रदान की। फिर उस यवनेश्वर ने यादवाद्रि पर जाकर यतिराज के दर्शन किये।

उस समय में समस्त संसार से समादृत भगवद्भक्ति परायण महात्मा कबीर* नाम के एक भगवद्भक्त हो गये हैं। उन्होंने जब यह सुना कि भगवद्भक्ति के कारण से राजकन्या भगवान से एकाकार हो गयी है। तो इस अद्भुत वृत्तान्त को सुनकर वे नारायणपुर गये और वहाँ पर यवन राजकन्या की मूर्ति को भगवान के चरणारविन्दों में विराजमान देखकर अत्यन्त विस्मय को प्राप्त हुये। तत्पश्चात् उन्होंने यतिराज को प्रणाम करके उनके श्रीमुख से यवन राजकन्या का समस्त वृत्तान्त सुना। जिसको सुनकर उनको परम विस्मय हुआ। यहाँ से दर्शन करके उन्होंने यतिराज की आज्ञा से अन्य दिव्यदेशों की यात्रा के लिये प्रस्थान किया और फिर श्रीरंगम् पहुँचे। यहाँ श्रीरंगनाथ भगवान के वैभव को देखकर उनको अत्यन्त आनन्द हुआ। साथ ही श्रीरंगनाथ भगवान से बढ़कर अन्य कोई देवता नहीं है। ऐसा अनुभव करके उन्होंने श्रीरंगनाथ भगवान से सारे संसार की जनता के लिये मोक्ष की याचना की। तब श्रीरंगनाथ भगवान ने कहा कि- ''मैं तो मात्र प्रपन्न लोगों को ही मोक्ष देने का अधिकारी हूँ। पतित जीवों को मोक्ष प्रदान करने वाले तो श्रीजगन्नाथ भगवान है। अर्थात् मैं ''प्रपन्न पावन'' हूँ और वे ''पतित पावन'' हैं। इसका क्या कारण है? वह भी मैं तुम्हे बताता हूँ। मेरे आयुध चक्र के सम्बन्ध के बिना किसी को मोक्ष नहीं हो सकता है। इस चक्र के चिह्न को धारण करने से अथवा मेरे हाथ में रहे चक्र के दर्शन से और चक्र के स्पर्श से मनुष्य मोक्ष को प्राप्त करता है। चक्रांकित हो जाने से निश्चय ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। जैसे इस चक्र के द्वारा मारे गये मेरे शत्रु असुर दैत्य भी इसके सम्बन्ध मात्र से मुक्त हो गये हैं। अतः जो संसार में पतित जीव हैं, वे मेरे इस चक्र के दर्शन मात्र से मुक्त हो जाते हैं इसमें कोई भी संदेह नहीं। अतः जगन्नाथपुरी में मेरे चक्र के दर्शन कर असंख्य पतित नित्य मुक्ति को प्राप्त करते हैं। वहाँ पर नीलचक्र के दर्शनों का बड़ा महत्व है। अतः यहाँ से तुम जगन्नाथ पुरी जाओ और वहाँ परम पवित्र नीलचक्र के दर्शन करने का सभी जनता को उपदेश दो। तब तुम्हारी इच्छा सफल होगी, यह निश्चित है।''

यहाँ से प्रस्थान कर भक्त कबीरदासजी कलिंग देश पहुँचे और वहाँ से राजा के द्वारा सुपूजित होकर श्री जगन्नाथपुरी में आये। यहाँ श्री जगन्नाथ भगवान को प्रणाम कर विविध प्रकार के नृत्य, स्तुति के द्वारा उनको प्रसन्न किया और फिर भगवत्प्रसाद से जीवन निर्वाह करते हुये कुछ दिनों तक वहीं निवास किया। इनकी भक्ति से प्रसन्न होकर एक दिन भगवान ने इनको दर्शन देने के हेतु से एक कुत्ते का रूप धरकर इनके सामने आये और भोजनार्थ बनाई गई बाटियों में से एक 'बाटी' मुँह में दबाकर भाग गये यह देखकर सभी प्राणियों में मित्रता का भाव रखने वाले महात्मा कबीर अपने हाथ में घृत की कटोरी लेकर उनके पीछे यह कहते हुये दौड़ने लगे कि- ''अरे! ठहरो! कम से

* सुप्रसिद्ध भक्त कबीर के अतिरिक्त यह दूसरे कबीर हुये हैं, ऐसा ज्ञात होता है। क्योंकि सुपरिचित कबीरजी का जीवनकाल तो यतिराज रामानुजाचार्य के जीवनकाल से बहुत बाद का है और वे तो श्री रामानन्दचार्य जी के शिष्य थे। उनका इतिहास तो सर्वविदित है।

कम बाटी को घी से तो चुपड़ लेने दो। कच्ची है पेट में दर्द करने लगेगी।'' यह कहकर दौड़ते हुए उनके पास पहुँच गये। तब फिर भगवान इसी रूप में उनको समुद्र के तट पर एकान्त में ले गये ओर फिर शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी प्रभु जगन्नाथजी ने प्रत्यक्ष होकर उनको दर्शन दिये।

अविनाशी घट-घट वासी, सगुण, साकार परमात्मा श्री जगन्नाथ भगवान के दर्शन कर आनन्द से गद्गद् होकर महात्मा कबीर ने भगवान को प्रणाम किया और फिर उनकी स्तुति करने लगे। इससे प्रसन्न होकर भगवान् श्री जगन्नाथ ने उनको परम दुर्लभ मोक्ष प्रदान कर दिया। सभी पुरवासियों ने भगवान् के श्रीमुख से इस वृत्तान्त को सुनकर आश्चर्य अनुभव किया और समुद्र तट पर आकर उन्होंने उस जीवनमुक्त महात्मा के दर्शन कर उनका विधिपूर्वक दाह-संस्कार किया।

यह कबीर नामक महात्मा दिल्लीश्वर का ही पुत्र था। जब इस अद्‌भुत वृत्तान्त को उन्होंने सुना तो उन्हें आश्चर्य एवं दुःख हुआ, और स्थानीय पण्डितों के द्वारा समझाने पर दिल्लीश ने यतिराज श्री रामानुजाचार्य की भक्तिभाव के साथ पूजा की और फिर आदर सहित अपने दामाद भगवान श्री सम्पत्कुमार के लिये बहुत-सा धन देकर एवं आचार्यरूप में स्थित अपनी पुत्री के लिये सोने की पालकी, भूमि एवं एक करोड से भी अधिक धन प्रदान कर उन्होंने हर्ष व्यक्त किया।

दिल्लीश्वर के द्वारा सम्मानित यतिराज ने कुछ काल तक श्रीनारायणपुर में निवास किया और फिर उन्होंने श्री सम्पत्कुमार भगवान को लाने में चारों वर्णों से भी अलग जिन निम्न जाति के लोगों ने साथ दिया था, उन लोगों पर दया करके यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने सदैव के लिये यह मर्यादा निश्चित की कि सम्पत्कुमार भगवान के वार्षिक उत्सव के समय तीन दिनों तक सभी जाति के लोग बलिपीठ तक जाकर भगवान के दर्शन करें और कल्याण सरोवर में स्नान भी करें। उक्त समय से आज तक श्रीजगदाचार्य के आदेश से भगवान के उत्सव के समय तीन दिनों तक अन्त्यज भी कल्याण सरोवर में स्नान करके मन्दिर में बलिपीठ तक जाते हैं और भगवान के विमान की परिक्रमा कर प्रणाम करने के बाद भगवान को तेल और चावल समर्पित कर कृतार्थ होते हैं।

भगवद्भक्त अन्त्यजों के लिये उस समय यतिराज ने मन्दिर प्रदेश की यह मर्यादा स्थापित की जब कि लोग इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। यह परम्परा आज तक चली आ रही है।

तदनन्तर मन्दिर के अर्चकों ने शास्त्र-विधि से परिमार्जित करके भगवान का अवशेष उत्सव सम्पन्न किया और यतिराज ने यहाँ पर एक मठ की स्थापना की जिसको 'यतिराज मठ' कहते हैं। श्री सम्पत्कुमार भगवान् की विधिवत् प्रतिष्ठा करने के बाद यतिराज इसी यादवाद्रि पर्वत पर सुखपूर्वक निवास करते हुये भागवत धर्म प्रचार करने लगे।

यह विशाल पर्वत परम पवित्र है। शास्त्रों में इसकी अत्यन्त महिमा वर्णित है। एक बार कृतयुग में श्री सम्पत्कुमार भगवान् दिव्य विमान पर चढ़कर ब्रह्मलोक से मृत्युलोक में आये थे। तब इस पर्वत पर उन्होंने भगवान श्रीमन्नारायण की स्थापना कर विधिवत् पूजा की थी। इसी कारण से इसका नाम उस समय में नारायणाद्रि! प्रसिद्ध हुआ। त्रेतायुग में महायोगी दत्तात्रेय ने यहाँ वेद पुरुषों को शिष्य बनाकर वेद पुष्करिणी के तट पर तपस्या करते हुये निवास किया था। इस कारण से त्रेतायुग में इस पर्वत का 'वेदगिरि' नाम प्रसिद्ध

हुआ। द्वापर में यदुनाथ भगवान श्रीकृष्ण ने यहाँ पर आराधना की थी। तब से इसका नाम ‘यादवाद्रि’ पडा और अब कलियुग में यतिराज ने यहाँ पर श्री सम्पत्कुमार भगवान् को प्रतिष्ठित किया, इसलिये इसका नाम ‘यतिगिरि’ प्रसिद्ध हो गया है।

इसके पश्चात् यतिराज रामानुजाचार्य यहाँ अपने सभी वर्णों और सभी जातियों के शिष्य समुदाय में इस प्रकार से सुशोभित हुये जिस प्रकार गन्धमादन पर्वत पर नारायण मुनि सुशोभित हैं।

इसके बाद इस पर्वत का महत्व बताते हुये यतिराज रामानुजाचार्य ने शिष्यगणों से कहा कि- “इस पर्वत पर निवास करने का बड़ा भारी महत्व है। यहाँ निवास करने वाले सज्ञनों का तो कहना ही क्या? जो दुर्जन भी यहाँ निवास करेंगे उनका भी कल्याण होगा। इसमें किंचित भी संदेह नहीं। यहाँ निवास करने वालों को मोक्ष का जन्म सिद्ध अधिकार है।”

शिष्यों को श्रीभाष्य के रहस्यों को समझाते हुये अपने अलौकिक ज्ञान से समस्त प्रान्तों के विद्वानों को जीतकर वहाँ पर विजय स्तम्भ स्थापित कर, विशिष्टाद्वैत दर्शन का प्रचार-प्रसार कर, यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने अपने आश्रित भक्तों का सदैव कल्याण किया। श्रीरंगनाथ भगवान की कृपा से आपका यश चारों दिशाओं में फैलने लगा।

भगवान सम्पत्कुमार के नित्य कैंकर्य के कारण यतिराज श्री रामानुजाचार्य श्रीरंगनाथ भगवान के विरह जनित दुःख को भूल गये। जितना प्रेम आपका श्रीरंगनाथ भगवान में रहा, उनसे भी अधिक प्रेम आप सम्पत्कुमार भगवान से करने लगे। इसका मुख्य कारण यह था कि श्रीरंगनाथ भगवान में आप पिता भाव रखते थे, जिससे उनके प्रति आपकी पूज्यनीय श्रद्धा रही। एवं श्री सम्पत्कुमार भगवान में आपका पुत्र भाव था, जिससे वात्सल्य भावना अधिक रही। पिता की श्रद्धा भावना की अपेक्षा पुत्र में वात्सल्य भावना का महत्व विशेष है।

इस कारण से यतिराज श्री सम्पत्कुमार भगवान् को अपना पुत्र मानकर, एक पिता जिस तरह अपने पुत्र की मंगल कामना के लिये अहर्निश प्रयत्नशील रहता है, वैसे ही आप भी इनके मंगलाशासन में रत रहने लगे।

यतिराज के वियोग से दुःखित होकर एवं श्रीवैष्णव द्वेषी राजा कृमिकण्ठ के अत्याचारों से भयभीत होकर श्रीरंगम् के निवासी श्रीवैष्णव धीरे-धीरे आकर यादवाद्रि पर बसने लग गये।

इस प्रकार कुछ ही समय में यतिराज की पूर्ण कृपा से सिंह व्याघ्रों से मुक्त भयंकर यादवाद्रि का जंगल एक सुन्दर नगर के रूप में परिवर्तित हो गया और श्रीरंगम् श्रीवैष्णवों से शून्य हो जाने के कारण बहुत ही भयंकर अरण्य के समान दिखलाई पड़ने लगा। तब फिर भगवान ने यह विचार किया कि यतिराज श्री रामानुजाचार्य के वहाँ निवास करने के कारण ही आज यादवाद्रि रम्य बन गया है और उनके जाने के बाद यह स्थान एकदम शून्य हो गया है।

यह देखकर अपने नगर श्रीरंगम् को पुनः उन्नत बनाने के विचार से श्रीरंगनाथ भगवान ने अपनी माया के द्वारा रचित चोल नरेश राजा कृमिकण्ठ का नाश करके यतिराज श्री रामानुजाचार्य का हर्ष बढ़ाने का निश्चय किया।

।।श्री प्रपन्नामृत का 48वाँ अध्याय पूर्ण हुआ।।

क्रमशः

केसर

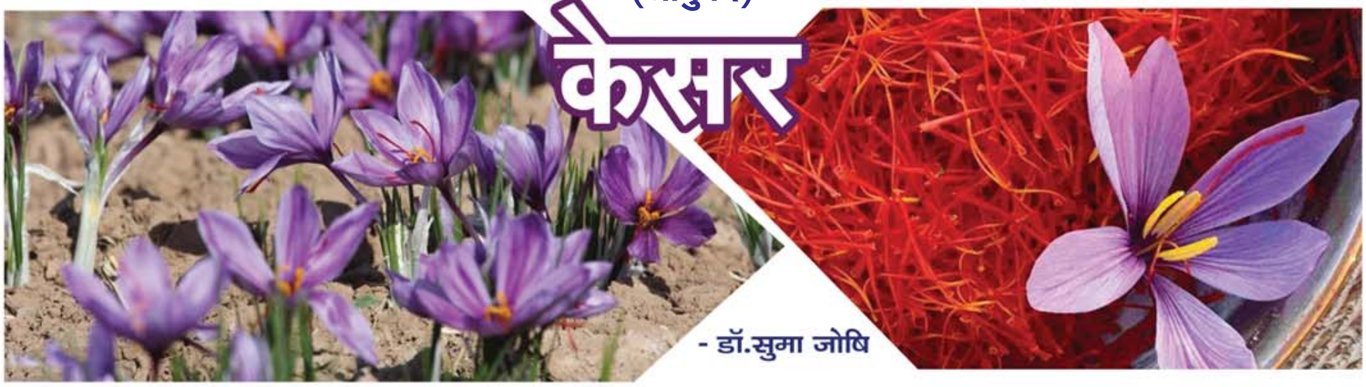

- डॉ.सुमा जोषि

केसर, जिसे Saffron भी कहा जाता है, Crocus sativus फूल से प्राप्त एक मसाला है। यह अपने विशिष्ट स्वाद, सुगन्ध और रंग के लिए अत्यधिक बेशकीमती है। खाना पकाने में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, विशेष रूप से भारतीय, फारसी और भूमध्यसागरीय व्यंजनों में, लड्डु और डेसर्ट जैसे व्यंजनों में एक अनूठा स्पर्श जोडता है। इसके अतिरिक्त, केसर का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में इसके सम्भावित स्वास्थ्य लाभों, जैसे एंटीऑक्सीडेंट गुणों और मूड में सुधार के लिए सदियों से किया जाता रहा है। अपनी श्राम-गहन कटाई प्रक्रिया के कारण, केसर वजन के हिसाब से दुनिया के सबसे महंगे मसालों में से एक है।

यह एक बारहमासी पौधा है जो Iridaceae परिवार से संबंधित है। यह एक बल्ब से उगता है और तीन चमकीले लाल रंग के कलंक (Stigma) के साथ बैंगनी फूल पैदा करता है, जिन्हें केसर बनाने के लिए काटा और सुखाया जाता है। पौधे की पत्तिया पतली, घास जैसी होती हैं और शरद ऋतु में खिलती हैं। यह अच्छी जल विकासीवाली मिट्टी और धूपवाले वातावरण को पसन्द करता है।

आयुर्वेद में केसर को निम्नलिखित गुणों वाला बताया गया है :

रस (स्वाद) : कटु (तीखा), तिक्त (कडवा)।

गुण : स्निग्ध (चिपकनेवाला)।

वीर्य (शक्ति) : उष्ण (गरमवाला)।

विपाक (पाचन के बाद स्वाद) : कटु (पाचन के बाद तीखा स्वाद आता है)।

कर्म (क्रियाएँ) : त्रिदोषहर (सभी तीनों दोषों को कम करता है)।

महिलाओं के लिए केसर के स्वास्थ्य लाभ :

केसर, अक्सर महिलाओं के लिए कई स्वास्थ्य लाभों से जुडा होता है, जिनमें शामिल हैं :

मासिक धर्म स्वास्थ्य :

यह मासिक धर्म चक्र को विनियामित करने और मासिक धर्म की ऐंठन से राहत दिलाने में मदद कर सकता है। माना जाता है कि केसर में मूड बढ़ाने वाले गुण होते हैं, जो सम्भावित रूप से अवसाद और चिन्ता के लक्षणों को कम करता है। कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि केसर प्रजनन स्वास्थ्य को बढ़ाकर प्रजनन क्षमता में सुधार कर सकता है। यह एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर है ऑक्सीडेटिव तनाव से लडकर और दाग-धब्बों को कम करके स्वस्थ त्वचा को बढ़ावा दे सकता है।

पुरुषों के लिए केसर के स्वास्थ्य लाभ :

जबकि केसर के कई स्वास्थ्य लाभ पुरुषों और महिलाओं दोनों पल लागु होते हैं, पुरुषों के लिए भी कुछ विशिष्ट लाभ हैं :

माना जाता है कि केसर में कामोत्तेजक गुण होते हैं और यह पुरुषों में कामेच्छा और यौन क्रिया को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है। कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि केसर शुक्राणु की गुणवत्ता बढ़ा सकता है और शुक्राणु की गतिशीलता बढ़ा सकता है, जिससे पुरुष प्रजनन

क्षमता में सम्भावित सुधार हो सकता है। महिलाओं की तरह, केसर में मूड-बूस्टिंग गुण हो सकते हैं, जो पुरुषों में समग्र कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य को लाभ पहुँचा सकते हैं।

केसर के सामान्य लाभ :

केसर पौधों के यौगिकों से समृद्ध है जो एंटीऑक्सिडेंट के रूप में कार्य करते हैं, जैसे कि क्रोसिन। एंटीऑक्सिडेंट कोशिकाओं को ऑक्सीडेटिव तनाव से बचाने में मदद करते हैं। केसर हल्के से मध्यम अवसाद के लक्षणों का इलाज करने में मदद कर सकता है, लेकिन निश्चित सिफारिश करने से पहले अध्ययन आवश्यक है। केसर में उच्च मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट होते हैं, जो कैंसर कोशिकाओं को मारने में मदद कर सकते हैं और स्वस्थ कोशिकाओं को नुकसान नहीं पहुँचाते हैं। हालाँकि, अधिक मानव अनुसन्धान की आवश्यकता है।

केसर को स्नैकिंग को कम करने और भूख को नियन्त्रित करने के लिए जाना जाता है। बदले में, ये व्यवहार वजन कम करने में मदद कर सकते हैं। पशु और टेस्ट-ट्यूब अध्ययनों से संकेत मिलता है कि केसर के एंटीऑक्सीडेंट गुण रक्त कोलेस्ट्रॉल को कम कर सकते हैं और रक्तवाहिकाओं और धमनियों को अवरुद्ध होने से रोक सकते हैं। रक्त शर्करा के स्तर को कम कर सकता है। केसर रक्त शर्करा के स्तर को कम कर सकता है और इंसुलिन संवेदनशीलता बढ़ा सकता है, जैसा की टेस्ट-ट्यूब अध्ययन और मधुमेहवाले चूहों में देखा गया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि केसर AMD (Age-related Macular Degeneration) वाले वयस्कों में आंखों की रोशनी में सुधार करता है और मुक्त कण क्षति से बचाता है, जो AMD से जुडा हुआ है। केसर के एंटीऑक्सीडेंट गुण अल्जाइमर रोग से पीडित वयस्कों में अनुभूति में सुधार कर सकते हैं। केसर श्वसन संबन्धी समस्याओं जैसे सर्दी, खांसी, अस्थमा, लम्बे समय से चली आ रही ब्रोंकियल सूजन और अन्य फेफडों की बिमारियों को ठीक करने में मदद कर सकता है।

केसर का उपयोग कैसे करें?

केसर का उपयोग सदियों से एक शानदार मसाले के रूप में किया जाता रहा है। इसका उपयोग कैंडी और चाय बनाने के लिए किया जाता है और इसका उपयोग प्राकृतिक खाद्य के रूप में भी किया जाता है। केसर को तुलसी की पत्तियों में भिगोकर त्वचा पर लगाने से मुंहासों से छुटकारा मिलता है।

भीगे हुए केसर को जैतून के तेल, नारियल के तेल या कच्चे दूध के साथ मिलाकर चेहरे के रक्त संचार को बढ़ाने में मदद मिलती है। नियमित रूप से केसर का सेवन करने से पहले, हमेशा अपने आयुर्वेदिक चिकित्सक से परामर्श करना चाहिए।

केसर के अधिक सेवन से दुष्प्रभाव

कुछ सामान्य दुष्प्रभावों में उनींदापन, पेट की समस्याएँ और मतली या उल्टी शामिल हैं। एलर्जी प्रतिक्रियाएँ भी सम्भव हैं। केसर की अधिक मात्रा गर्भाशय को सिकुड सकती है और गर्भपात का कारण बन सकती है। गर्भावस्था में प्रयोग संभालकर करना चाहिए। ऐसा लगता है कि केसर मूड को प्रभावित करने में सक्षम है। यह द्विध्रुवी (Bipolar disorder) विकार वाले लोगों में उत्तेजना और आवेगपूर्ण व्यवहार को ट्रिगर कर सकता है। ऐसी स्थिति में इसका प्रयोग ना करें।

केसर केन्द्रीय तांत्रिका तंत्र को धीमा कर देता है। सर्जरी के दौरान उपयोग की जानेवाली एनेस्थीसिया और अन्य दवाएँ भी केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करती हैं। निर्धारित सर्जरी से कम से कम दो सप्ताह पहले केसर लेना बन्द करना चाहिए। केसर एक कीमति मसालों में से एक है और इसके उपयोग भी है। अधिक मात्रा में लेने से दुष्प्रभाव भी है। अमृत है करके अधिक मात्रा में लिया तो वह भी विष बन सकता है। वैद्य के सम्पर्क के बाद ही उपयोग करें।

''स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।''

जून महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - यह माह आपके लिए शुभ फलदायक सिद्ध होगा। दैनन्दिनी कार्य व्यवस्तिथ, आरोग्य सुख, घर-परिवार में सुख-शान्ति, आनन्द का माहौल, नौकरी में पदोन्नति। कार्य क्षेत्रों का विस्तार, शक्ति संवर्धन, संतान सुख, अभिष्ट कार्य की सिद्धि। अपनों का सहयोग, भ्रातृ सुख, सम्पत्ति लाभ, गृह-भूमि कार्यों में संलग्नता, शत्रुपक्ष परास्त होंगे।

वृषभ राशि - यह महिना आपके लिए लोकोपकारक होगा, सामाजिक-धार्मिक कार्यों में संलग्नता, राजनैतिक व्यस्तता, स्वास्थ्य उत्तम। आर्थिक समुन्नति, रचनात्मक कार्यों में पारिश्रमिक सफलता, छात्रों के लिए शुभ समय, पुराने कष्ट और उलझनों का समाधान, मांगलिक कार्य, पर्यटन योग।

मिथुन राशि - इस महीने आप सुख-दुःख दोनों का अनुभव करेंगे, मिला-जुला प्रभाव दिखेगा। अपनों का दायित्व, कुटुम्बिक निर्वहन, निकटतम लोगों का-मित्रों का सहयोग। विद्या-बुद्धि का विकास, रुके हुए कामों में सफलता, आर्थिक सफलता, व्यापार में वृद्धि।

कर्कटक राशि - यह माह आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम, सामाजिक विकास, कार्य में अनेक सफलता, मन प्रसन्न, दाम्पत्य सुख। धनलाभ, कार्य क्षेत्रों में प्रगति, पारिवारिक सहयोग, कृषि कार्यों में सफलता।

सिंह राशि - शरीर स्वस्थ रहेगा, सामयिक-सामाजिक कार्यो का विकास, विभिन्न व्यक्तियों से संवाद, कृषि, भूमि कार्यों में प्रगति। सामाजिक-धार्मिक कार्यों से मान प्रतिष्ठा वृद्धि, एकाधिक स्त्रोतों से धनलाभ, व्यापार वृद्धि, शैक्षणिक उत्कर्ष, बौद्धिक विकास।

कन्या राशि - आपके लिए यह माह उत्साह वर्धक रहेगा, आरोग्य सुख, नौकरी-व्यवसाय में उन्नति, सन्तोष-सुख-समृद्धि, उल्लास पूर्ण समय अनुकूल, कार्यों में सफलता। शैक्षणिक रुचि होने से प्रगति, अनेक स्त्रोतों के द्वारा धनलाभ, अपनों का सहयोग, उच्चाधिकारियों का पूर्ण सहयोग, पदोन्नति।

तुला राशि - यह माह आपके लिए मध्यम फलदायक रहेगा, कार्य में अवरोध, स्वास्थ्य चिन्ता, मन में दुष्प्रवृत्तियों का उदय, मन विचलित होने से अनैतिक कार्यों में प्रवृत्ति, दूसरों के बातों पर ध्यान केन्द्रित न करे वरना नुकसान होगा, आत्मसंयम जरूरी, धनागम में बाधा।

वृश्चिक राशि - नियमित दिनचर्या होने के कारण शरीर स्वस्थ, मन प्रसन्न, नूतन कार्यों का आरम्भ, सन्तान सुख, दाम्पत्य सुख, पारिवारिक सहयोग। गृह-भूमि, वाहन प्राप्ति, कृषि कार्यों में प्रगति, नौकरी-पेशों में उल्लास, रोजी-रोजगार क्षेत्रों से लाभ, यत्र तत्र भ्रमण करने के लिए मन विचलित होगा। जिससे स्वास्थ्य चिन्ता रहेगी। इष्ट मित्रों का सहयोग।

धनुष राशि - पुराने उलझनों से निवृत्ति, स्वस्थ शरीर, मनोबल में वृद्धि, आकस्मिक धनलाभ। नौकरी में उल्लास, कार्य क्षेत्रों का विस्तार, अपनों का सहयोग, व्यापार में सफलता, शत्रुपक्ष परास्त। एकाधिक स्त्रोतों से आयलाभ, यात्रायोग। तीर्थयात्रा, कुटुम्ब-प्रियजनों से बातचित, स्नेह पूर्ण वातावरण।

मकर राशि - यह माह आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। आरोग्य-कार्य सुख, आर्थिक सफलता, राजकार्यों में व्यस्तता एवं सफलता, कार्य क्षेत्रों की विघ्न-बाधाओं का निवारण। सामाजिक-धार्मिक कार्यों में अभिरुचि, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि।

कुंभ राशि - उल्लासदायक समय चल रहा है, आरोग्य सुख, सुन्दर-सुखद वातावरण, अपनों का - कुटुम्बजनों का पूर्ण सहयोग। सामाजिक-धार्मिक कार्यों में अभिरुचि, उद्योग-धन्धों में वृद्धि और सफलता। वाहन सुख, नौकरी में उल्लास, सन्तान सुख, दाम्पत्य सुख, आर्थिक समुन्नति-लाभ।

मीन राशि - आप अपने कार्य क्षेत्रों का विस्तार करने में सफल होंगे। कार्य सुख, शरीर स्वस्थ, आर्थिक लाभ, बुद्धि-विवेक, वाक्चातुर्य से वाद-विवाद में जय। शत्रुपक्ष कमजोर रहेंगे, भाग्योदय, शैक्षणिक सफलता, नये-पुराने लोगों से मुलाकात होने के कारण मन प्रसन्न और कार्य सिद्धि। छात्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा।

नीतिकथा

सुखमय जीवन का रहस्य

- श्री के रामनाथन

सोनपुर नामक गाँव में एक बार राजानंद नामक एक ऋषि आये थे। उस गाँव के शांत वातावरण को देखकर उन्होंने थोडे समय तक वहाँ ठहरने का निश्चय किया। उनकी इच्छानुसार उनके शिष्यों ने वहाँ ठहरने के लिए एक झोंपड़ी बना दी। वे ऋषि रोज नदी में स्नान करने के बाद आश्रम में आकर भगवान के ध्यान में लग जाते थे। ऋषि के बारे में सुनकर गाँव के लोग रोज शाम के समय में उनसे मिलने आते थे और उनका आशीर्वाद लेकर चलते थे।

सूर्यसेन उसी गाँव में रहने वाला एक गरीब किसान था। वह पारिवारिक संकटों से अत्यंत त्रस्त था। उसने भी ऋषि के बारे में सुना और सोचा कि एक बार उनसे मिलकर अपने जीवन में सुख पाने का उपाय पूछ लें।

वह उस दिन शामको ऋषि से मिला और कहा, ''मुनिवर, मुझे जीवन में दुःख ही दुःख झेलना पड़ रहा है। हर कार्य के लिए पैसे की बड़ी जरूरत होती है। मैं अपने परिश्रम से पैसा कमाता हूँ, पर वे सब खर्च हो जाते हैं। यदि कुछ पैसों को बचाकर रखूँ तो पत्नी सहित सब मुझे कंजूस कहते हैं। इसलिए मेरे हाथ में कोई पैसा बचता नहीं। इस समस्या से छूटने के लिए आप मुझे एक उपाय बताइये।''

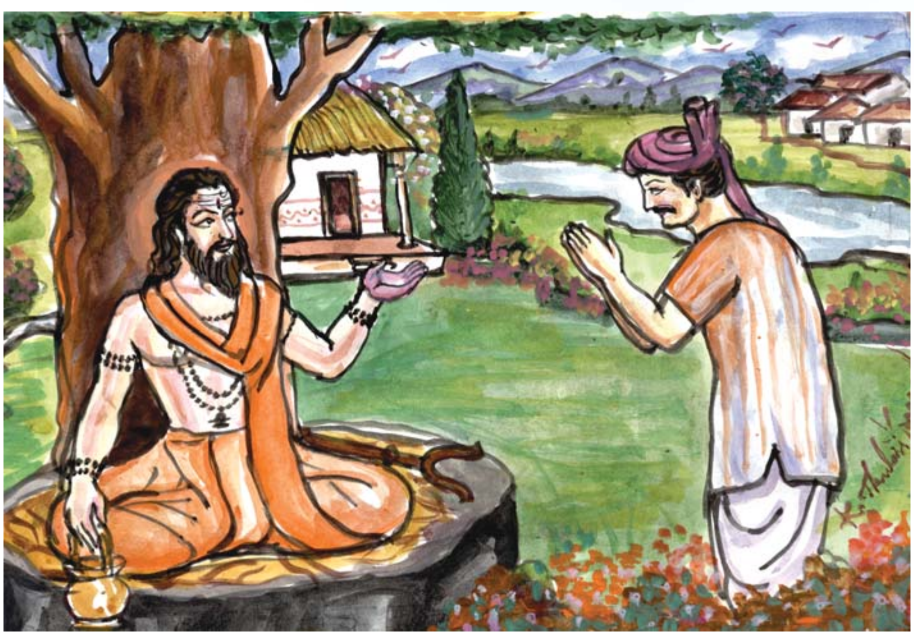

उस गरीब किसान की बात सुनकर ऋषि ने कहा, वत्स! अनेक लोग तुम्हारे जैसे ही झंझट में फंसे रहते हैं। इससे छूटने के लिए मैं एक कहानी द्वारा उपाय बताना चाहता हूँ। ऐसा कहकर ऋषि ने आगे कहा। एक बार गाँव में आये एक साधु ने देखा कि वहाँ कोई मन्दिर या गुरुकुल नहीं है। उन्होंने सोचा कि यहाँ एक मन्दिर और उसके निकट एक गुरुकुल को स्थापित करना भला होगा। उन्होंने सोचा कि इस कार्य को पूर्ण करने के लिए दो लाख रुपये की जरूरत है। एक लाख रुपये गाँव के लोगों से वसूल कर देंगे और बाकी को गाँव के बडे धनवान रत्नसेन से माँग लेंगे।

साधु मन्दिर बनाने के काम में लग गये। उन्होंने अपने एक शिष्य को धनवान रत्नसेन से मिलकर धन की सहायता ले आने की आज्ञा दी। गुरु की बात पर वह शिष्य रत्नसेन से मिलने गया। तब उसने देखा कि उस धनवान के घर के सामने एक पेड़ के नीचे लोगों की बड़ी भीड़ थी और वहाँ एक नौकर पेड़ से बंधा पड़ा था। वह धनवान एक लकड़ी से उसे मार रहा था। यह देखकर शिष्य चौंक उठा और आस-पास के लोगों

से कारण पूछा। तब उनमें से एक ने कहा कि धनवान के नौकर ने दाल खरीद लाते समय उसमें से दस दाल नीचे गिरा दिये थे। इस अपराध के लिए वे लकड़ी से उसे दस मार दे रहे हैं। यह सुनकर शिष्य भयभीत हो उठा और सोचा कि ऐसे निर्दयी से धन की सहायता कैसे मिलेगी। इसलिए वह खाली हाथ अपने गुरु के पास लौटा और सारी बातें सुनायी। सब सुनकर गुरु ने कहा वत्स, चिंता मत कर, तुम असमय में वहाँ पहुँच गये थे। कल फिर एक बार उस धनवान से मिलो।

साधु की आज्ञा पर वह शिष्य अगले दिन फिर उस धनवान से मिलने गया। इस बार उसके महल में एक खंभ पर एक नौकर को बाँध रखकर उसके शरीर से दस बूँद खून निकाल रहे थे। पूछने पर पता चला कि उस नौकर ने तेल खरीद लाते समय दस बूँदों को नीचे गिरा दिया था। यह देखकर शिष्य ने सोचा कि ऐसे कंजूस से मंदिर और गुरुकुल के निर्माण के लिए क्या दान मिल सकता है। इसलिए वह फिर खाली हाथ साधु के पास लौट आया और सारी बातें सुनायी। सब सुनकर साधु ने शांत स्वर में कहा, वत्स, तुम अगले दिन और एक बार उससे मिलो।

गुरु की आज्ञा मानते हुए भी अगले दिन वह बेमन धनवान से मिलने गया। भाग्यवश उस दिन वहाँ कोई ऐसी घटना नहीं घटी थी। उसने धनवान से मिलकर साधु का निवेदन सुनाया। सब सुनकर धनवान हर्षित मन से पूछा कि इस कार्य के लिए कितने रुपये का खर्च होगा? शिष्य ने उत्तर दिया कि दो लाख रुपये का खर्च होगा। परंतु एक लाख रुपये गाँव के लोगों से दान लिये जायेंगे। इसलिए आप सिर्फ एक लाख रुपये दीजिए। धनवान कमरे के अन्दर गया और दो लाख रुपये लेकर आया। उसने शिष्य के हाथ में उन रूपयों को देते हुए कहा कि इस उत्तम कार्य को बिना विलंब करना ही भला है। मुझे आपके साधु के बारे में अच्छा परिचय है। इसलिए उनसे कह देना कि इन दो लाख रुपयों से अपना काम जल्दी करें।

धनवान के ऐसे व्यवहार से शिष्य को बड़ा आश्चर्य हुआ। वापस लौटते ही उसने साधु से सारी बातें सुनायी और कहा कि धनवान में ऐसा परिवर्तन कैसे हुआ? उसको समझाते हुए साधु ने कहा कि असल में धनवान बड़ा दानी है। वह बेकार का खर्च कभी नहीं करेगा। इसलिए उसने अपने काम में लापरवाह रहे नौकरों को ऐसे दंड देकर सुधार दिये। वह अपनी कमाई के अनुसार खर्च करने वाला है और अपने पैसों को बेकार होने न देने वाला है। इसलिए उसको दान देना सुलभ हो गया।

ऋषि की यह कहानी सुनकर सूर्यसेन की आँखें खुल गयीं। उसने निर्णय कर लिया कि पैसों को बेकार खर्च करने पर जीवन में सदा दुःख झेलना पड़ रहा है। इसलिए आगे से अपनी कमाई में से मिलते धन को बेकार होने न देना ही सुखमय जीवन का रहस्य है। उसने ऋषि को उनके उपदेश के लिए धन्यवाद देकर घर लौटा, उसने अपने विचार पर दृढ रहकर जीवन के संकट को जीत लिया और बड़ा धनवान और दानी के नाम से गाँव भर में प्रसिद्ध हो गया।

अप्रैल-2024 महीने का क्विज-21 के समाधान

1) तिरुपति बालाजी, 2) प्रभु श्रीराम,

3) नागतीर्थ, 4) सारश्रीकर विमान,

5) निलमंगै वल्लि, 6) उगादि,

7) भगवान श्रीकृष्ण, 8) सीता देवी,

9) अहल्या, 10) श्रीराम,

11) मत्स्य जयंती, 12) दशरथ,

13) रामचरित मानस, 14) १४ वर्ष,

15) श्री वेदनारायण स्वामीजी.

चित्रकथा

हरि नाम का महत्व

तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.द्वारकनाथ

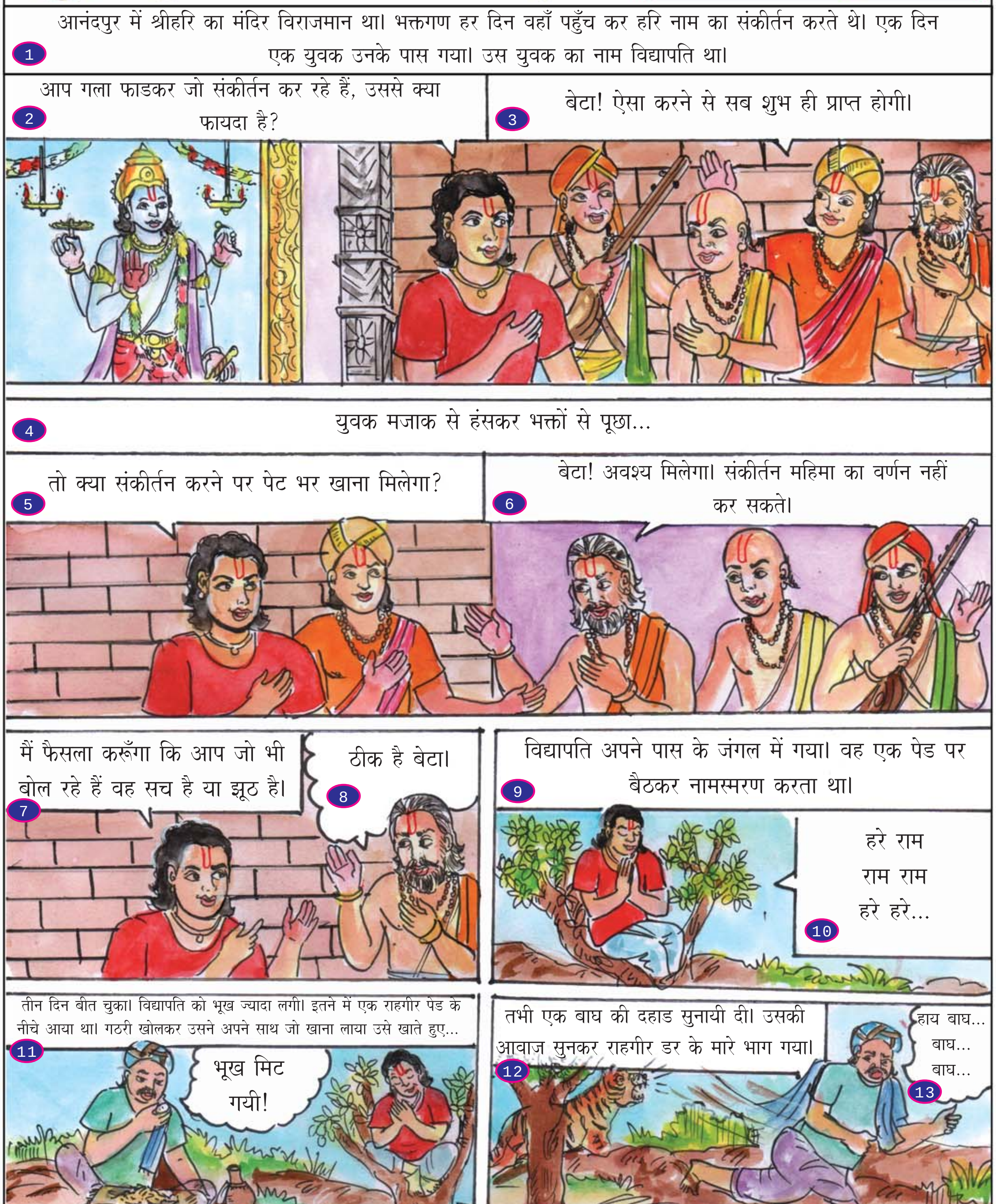

भात की गठरी पेड के नीचे ही था। विद्यापति पेड के ऊपर था। थोडी देर के बाद वहाँ चोर आये। वे लोग चोरी की हुई पैसों को आपस में बाँट लिये। लौटते वक्त भात की गठरी को उन्होंने देखा।
14
अरे... यहाँ भात है! इस (खाने में) भात में हमारे दुश्मन विष मिलाये होंगे?...
15
संदेह से चोरों ने चारों ओर ढूँढा। वे लोग पेड पर बैठा विद्यापति को पकड कर नीचे उतारा।
16
अरे! इस भात(खाने) को खाओ! क्या तुम इस में विष मिलाये हो?
17
मैं नहीं खाऊँगा। इसमें विष नहीं मिलाया गया।
18
चोरों ने जबर्दस्ती से विद्यापति से (खाना) भात को खिलाया।
19
चलो चलेंगे।
चोरों चले गये।
20
संकीर्तन की महिमा का वर्णन किया नहीं जाता। उस की महिमा से ही मुझे खाना मिला। भक्तों का कहना सच है!
21
विद्यापति पूरी तरह से बदल गया। इस प्रकार भगवान नाम का संकीर्तन करते हुए अच्छे रास्ते को अपनाया।
22
आप सब भगवान का नाम बोलो!
23
नीति : भक्ति और मुक्ति दोनों भगवन्नाम की संकीर्तन से ही प्राप्त होती है।
स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम...
लिंग/आयु............, चंदा नंबर........................
पता...
....
मोबाइल नं...

क्विज-23

1) बलभीमराय हनुमान मंदिर किस राज्य में है?
ज)..
2) भगवान विष्णु का अष्टाक्षरी मंत्र क्या है?
ज)..
3) प्रह्लाद के पिता जी का नाम क्या है?
ज)..
4) बलभीमराय हनुमान के मंदिर में पुष्करिणी कौन-सा आकार में है?
ज)..
5) 'उपबर्हण' - एक गन्धर्व या राक्षस?
ज)..
6) श्री सम्पत्कुमार भगवान जी का विग्रह को किस शहर से रामानुजाचार्यजी ने लेकर आया था?
ज)..
7) सीता देवी के पिताजी का नाम क्या है?
ज)..
8) शिवधनुष को किसने टूट किया था?
ज)..
9) हनुमान समुंदर को पारकर किस प्रांत को पहुँचा है?
ज)..
10) लव और कुश के माताजी का नाम क्या है?
ज)..
11) किस ऋषि के आश्रम में लव और कुश ने जन्मित हुयी है?
ज)..
12) ब्रह्मोत्सव में अंकुरार्पण के अगले दिन क्या आरोहण करते है?
ज)..
13) ज्वाला नरसिंह स्वामी किस रूप में दर्शन देते है?
ज)..
14) कारंज नरसिंह स्वामी किस मुद्रा में दर्शन देते है?
ज)..
15) श्री वेंकटेश्वरस्वामी का सेनाध्यक्ष का नाम क्या है?
ज)..

बालविकास

बिंदी को जोड़िए

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) इंद्र	अ) नरकलोक
2) वासुकी	आ) स्वर्ग लोक
3) चित्रगुप्त	इ) नागलोक
4) मंदिर	ई) पानी
5) पुष्करिणी	उ) घंटा

1) आ 2) इ 3) अ 4) उ 5) ई

नवग्रह मंत्र

आदित्याच सोमाय,
मंगलाय बुधायच।
गुरु शुक्र शनिभ्यश्य,
राहवे केतवे नमः।।

चित्रों को जोडिएँ

(a)

(b)

(c)

(d)

(e)

जवाब : a)5, b)4, c)1, d)3, e)2.

(1)

(2)

(3)

(4)

(5)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड
☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
(अ) चंदा की संख्या :
(आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
दिनांक :

स्थान :
दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

. . . .

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877
दूरभाष :
2264359, 2264543.
संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र
ॐ नमो वेंकटेशाय

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 21-04-2024 से दि. 23-04-2024 तक तिरुमल श्री बालाजी का वसंतोत्सव अत्यंत वैभव से संपन्न किया है।

दि. 21-04-2024 से दि. 23-04-2024 तक तिरुपति श्री कोदंडरामस्वामी जी का प्लवोत्सव अत्यंत मनोहर रूप से संपन्न किया है।

दि. 22-04-2024 को ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामीजी का कल्याणोत्सव के अवसर पर आं.प्र.राज्य सरकार की ओर से पवित्र रेशम वस्त्र एवं मोतियों को देते हुए आं.प्र.धर्मस्व शाखा के विशेष मुख्य सचिव श्री आर.करिकाला वलवन, आई.ए.एस.

दि. 22-04-2024 को ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामीजी का कल्याणोत्सव के अवसर पर ति.ति.दे. के ई.ओ. ने तिरुमल श्री बालाजी मंदिर से आभूषण लाकर भगवान को समर्पित करते हुए दृश्य।

दि. 26-04-2024 को तिरुमल श्री बालाजी को भारत देश के उपराष्ट्रपति माननीय श्री जगदीप धनखड़ जी ने धर्मपत्नी सहित भगवान जी का दर्शन किया है।

दि. 26-04-2024 को तिरुपति स्थित (BIRRD) बर्ड और बच्चों का श्री पद्मावती हृदयालय आस्पताल को निरीक्षण करते हुए आं.प्र. के राज्यपाल माननीय श्री अब्दुल नजीर जी।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Published by Tirumala Tirupati Devasthanams Printing on 25-05-2024 &
Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for
India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 5th of every month.